फरवरी २००१ Rs. 10/-

चन्दामामा

EARN

IN THE COMFORT OF YOUR HOME

You have been an avid reader of Chandamama, and here is a chance to associate yourself with the 54-year-old magazine and make money, too. Chandamama is appointing **SUBSCRIPTION AGENTS** throughout India. If you are above 18 years and love interacting with people, get in touch with us.

HURRY! GRAB THIS OPPORTUNITY!

CHANDAMAMA
INDIA LIMITED

82, Defence Officers' Colony,
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097.
Tele/fax : 234 7384 / 99
E-mail : subscription@chandamama.org

चन्दामामा

सम्पुट - १०३ फरवरी २००१ सञ्चिका - २

अन्तरङ्गम्

कहानियाँ

ज्ञानप्रद धारावाहिक

पौराणिक धारावाहिक

ऐतिहासिक विभूतियाँ

चित्र कथा

विशेष

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai–600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No.82, Defence Officers Colony, Ekattuthangal, Chennai - 600 097. Editor: Viswam

इस माह का विशेष

सहायता संतोष
(वेताल कथा)

यक्ष पर्वत

भारत की गाथा

अजेय गरूड़ा

सबसे उत्तम

उपहार

आप अपने
दूर रहनेवाले करीबियों के लिए
सोच सकते हैं

चन्दामामा

उन्हें उनकी पसंद की भाषा में एक पत्रिका दें

असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल व तेलुगु

और उन्हें घर से दूर घर के
स्नेह को महसूस होने दें

शुल्क
सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अकं 900 रुपये
भारत में भूतल डाक द्वारा
बारह अंक 120 रुपये

अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें
सेवा में :

PUBLICATION DIVISION
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
New 82 (Old 92), Defence Officers Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

संपादक
विश्वम

चन्दामामा पत्रिका विभाग
नया नं. 82 (पुराना नं.92),
डिफेन्स आफिसर्स कॉलोनी,
इकाडुथंगल,
चेन्नई - 600 097.
फोन/फॅक्स : 234 7384/
234 7399
e-mail :
chandamama@vsnl.com

For USA
Single copy $2
Annual subscription $20
Mail remittances to
INDIA ABROAD
43 West 24th Street
New York, NY 10010
Tel: (212) 929-1727
Fax (212) 627-9503

संस्थापक

चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

नई सहस्त्राब्दी में चन्दामामा

आज चन्दमामा के बहुत सारे पाठक उस समय का अनुमान नहीं लगा सकते, जब यह पत्रिका आरम्भ हुई थी। यह वह समय था, जब देश स्वतंत्रता प्राप्त कर रहा था। उस समय न टी.वी., न कमप्यूटर, न इन्टरनेट और नहीं ही नई छपाई तकनीक ही थी। पत्रिका का एक-एक अक्षर हाथ से लगाया जाता था। जो कम्पोज करनेवाले लकड़ी के एक केस में इन्हें बैठाते थे।

तकनीकी क्रांति आयी और आपकी पत्रिका उस समय से और अधिक सुन्दर लगने लगी, जबकि आपके पिता और दादा इसे पढ़ा करते थे। लेकिन यह यहाँ ही रुकती नहीं। अब चन्दमामा नई क्षितिज तक पहुँच रहा है। पहले से ही बहुत सारी पत्रिकायें और समाचार पत्र देश या विदेश में, चन्दमामा से भारतीय संस्कृति और सभ्यता जैसी सामग्री लेकर प्रकाशित कर रहे हैं। चन्दमामा टी.वी. के माध्यम से भी अपना खजाना प्रस्तुत करने की पूर्ण तैयारी में है। जिसका आरम्भ साठ के दशक में पत्रिका में छपी कहानियों से होगा जो भारी मात्रा में लोगों द्वारा सराही गई। पाठकों ने जिन्हें सैद्धांतिक जीवन का एक मंत्र माना, उसका प्रसारण इस माह के आरम्भ में हैदराबाद से तेलुगु में प्रारम्भ होगा। अन्य कहानियाँ अलग-अलग चैनलों पर देखने को मिलेंगी।

चंदामामा अपने पाठकों के उज्जवल, प्रसन्न और स्वस्थ तथा भाग्यशाली जीवन के हेतु अपनी परम्परा का पालन करते हुए विकसित विज्ञान एवं तकनीक, जो मानवता को दूषित कर रही हैं, उनका समुचित उपयोग करने के लिए पूर्ण रूप से सन्नद्ध है।

समाचार झलक

लगातार बोलना

मौखिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले हमारे किशोर प्रतियोगी यह तो जानते हैं कि किसी भी विषय पर ३ मिनट अथवा ५ मिनट बोलना कितना कठिन होता है। यह भी हो सकता है कि कुछ लोग सोचें की उन्हें तर्क-वितर्क पूरा करने के लिए कुछ और समय मिलना चाहिए था। चेन्नई में २७ वर्षीय काशीनाथन को 'आज की नारी का सामाजिक स्तर' विषय पर बोलने का अवसर मिला। वह ३ नवम्बर को १० बजे प्रातः से आरम्भ करके अगले दिन के ४ बजे सांय तक ३० घंटे लगातार बोलते रहे। उनका लक्ष्य गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड में अपना नाम लिखवाना था। उन्होंने एक विषय पर बिना रुके बोलने का पिछला रिकार्ड तोड़ दिया, जो न्यूजीलैण्ड के ६४ वर्षीय माईकल मोरल द्वारा २४ घंटे में स्थापित किया गया था। कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति काशीनाथ का यह भारषण सुन रहे थे। जिसमें मद्रास उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश भी शामिल थे।

अनोखा बगीचा

नए वर्ष पर भारत ने दृष्टिहीन लोगों को एक उपहार दिया है। राष्ट्रीय बनस्पति शोध संस्थान ने 'ब्लाईण्ड गार्डेन' का उद्घाटन लखनऊ में किया। जो इस तरह का विश्व में प्रथम बगीचा है। वहाँ जाने वाले मात्र पौधों, फलों और फूलों को छूकर, सूँघकर ही महसूस नहीं कर सकते बल्कि इनके बारे में ब्रेल लिपि में लिखी जानकारी भी पढ़ सकते हैं। उनकी सुविधा के लिए ये जानकारियाँ उनके कंधे के बराबरी तक पर लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त यदि वे पौधों के पास रखे फोन को उठायेंगे तो रिकार्डिंग उन्हें विस्तृत जानकारी देगी। जो पर्यटक शारीरिक रूप से विकलांग हैं, वे आसानी से अपनी पहिए वाली कुर्सी के साथ बगीचे में घूम सकते हैं।

ताज... खो गया ?

कछपुरा के लोग इसी बात से डर रहे थे। अब वह स्थान यमुना नदी के दूसरे तट पर है। जहाँ से मात्र ४०० मीटर की दूरी पर से कोई भी व्यक्ति विश्व विख्यात ताजमहल का सम्पूर्ण नजारा देख सकता है। वे लोग एक जाने-माने जादूगर के दावा किए जाने पर ताजमहल को हवा में अदृश्य हुआ देखने के लिए एकत्रित हुए थे। ८ नवम्बर को यह प्रदर्शन आरम्भ हुआ और सारा कार्यक्रम पी.सी. सरकार जूनियर द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसने उन्हें आश्चर्यचकित किया कि सचमुच वह ही प्रसिद्ध विधि का प्रयोगकर्ता है। और उसने कर दिखाया। हजारों आँखों के सामने ही वह सफेद संगमरमर हवा में विलीन हो गया। यह जादूगर की बेटी मेनका के ऊपर छोड़ दिया गया कि वह उनकी अविश्वसनीय आँखों को दो मिनट में वापस ले आए। जादूगर ने बताया कि "मैंने जादूगरी विज्ञान में 'अदृश्य रास' का प्रयोग किया था।"

एबैकस से एनजान तक

यह जापान के केयटो शहर में ३१ अक्तूबर को घटित हुआ। प्रतियोगियों के एक समूह को गणित का एक प्रश्न दिया गया। जिसमें उन्हें ९९२.५८ ७३१८ को ५६४७.७२३ से विभाजित करना था। वहाँ पर कोई कमप्यूटर अथवा कैलक्यूलेटर नहीं था और न ही कोई अबैकस, जो उनकी सहायता कर सके। इसके अतिरिक्त भी बहुत से लोगों को काल्पनिक अबैकस की मोतियाँ इधर-उधर करते हुए देखा जा सकता था। कुछ और लोग भी मन ही मन गणित करते हुए झूम रहे थे। कुछ भी हो यह १३ वर्षीय बालक हिरोकी सुचिया था जो कुछ ही पलों में अपना हाथ उठाते हुए चिल्लाया "हो गया।" उसने बोर्ड पर अपना उत्तर लिखा ०.१७५७५००००१३२ ७९६८८११५०१५५५५८२६६५८, यह उत्तर सही था ! उसने एनजान नाम से प्रसिद्ध विधि का प्रयोग किया। चीन द्वारा अविष्कृत एबैकस को जापान वासियों ने १५०० ए.डी. में जाना। इसमें मोतियों को पीछे की ओर धकेला जाता है और धातु के क्षणों से प्रश्न को हल किया जाता है। एबैकस के प्रयोगकर्त्ताओं को हाथ से मोतियाँ धकेलने के स्थान पर एक सरल विधि मिली। उन्होंने सिर्फ इतना सोचा कि वे एबैकस का प्रयोग कर रहे हैं। इसे एनजान कहा जाने लगा। अब वह समय दूर नहीं हैं जब कम्प्यूटर और कैलक्यूलेटर पुराने हो जाएँगे!

कहानी को सही अन्त दीजिए और पुरस्कार जीतिए !

सृजनात्मक प्रतिस्पर्धा

नीचे एक कहानी का आरम्भ दिया गया है । इसमें एक रोचक कथा के सभी उपादान मौजूद हैं । किन्तु यह 'सृजन' तुम्हारे हाथों में है ! तुम्हें सभी सम्भव कथाक्रमों की कल्पना करनी है और कहानी को अन्तिम रूप देना है । साथ ही एक आकर्षक शीर्षक भी । यह तुम्हें दो सौ से तीन सौ शब्दों के बीच करना है - न कम, न अधिक । सर्वोत्तम प्रविष्टि को आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा तथा इस पत्रिका में प्रकाशित भी किया जायेगा । यह प्रतिस्पर्द्धा हमारे बाल पाठकों के लिए है । अपना नाम, उम्र, कक्षा, विद्यालय का नाम तथा घर का पता (पिन कोड के साथ) लिखना न भूलना ।

राजा सूर्यदेव को एक मंत्री की नियुक्ति करनी थी। उनके सभी दरबारियों में मंत्रमूर्ति नामक एक दरबारी था। जिसने राजा से काफी सम्मान प्राप्त किया था। वह सोचता था कि दरबारी उसके प्रति हमेशा ईमानदार रहेंगे। उसे महारानी मायावती से अपना विचार बताने का अवसर मिला, जिनके चचेरे भाई विश्वबन्धु भी एक दरबारी थे।

"मुझे नहीं लगता कि विश्वबन्धु किसी तरह से मंत्रमूर्ति से कम है।" रानी ने कहा। "क्यों नहीं आप उसे अपना मंत्री बना लेते?" मायावती ने राजा सूर्यदेव से पूछा।

"क्यों नहीं? मैंने कब कहा कि वह इस कार्य के लिए सक्षम नहीं है।" राजा ने कहा। "लेकिन हमें अवसर आने पर उसकी परीक्षा अवश्य लेनी चाहिए।"

वीरबाबू राज्य में प्रसन्नता के व्यापारी थे। उनके एक सुन्दर कन्या थी। उसके रूप और गुण की चर्चा चारों ओर फैल गयी और तीन लोगों ने विवाह का प्रस्ताव भी भेजा। वीरबाबू दुविधा में पड़ गए कि किसे वर चुने। उन्होंने तीनों युवकों को अपने गुरु सनातन के पास भेजा। गुरु ने तीनों को देखा और ध्यान मग्न हो गए। जब उन्होंने अपनी आँखे खोली तो भीतर जाकर एक शंख में मिट्टी भरकर, दूसरी में पानी और तीसरी में दाने लेकर आए और एक-एक तीनों को दे दिया और कहा कि इसे वीरबाबू को दे देना।

व्यापारी भौंचक्का रह गया था। उसे इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसके गुरु ने अपना चुनाव बता दिया है। लेकिन फिर भी किसी कारणवश वह फैसला नहीं कर पाया। उसने तीनों युवकों को राजा के पास भेजा।

सूर्यदेव ने सोचा अब यह अवसर है कि मंत्रमूर्ति और विश्वबन्धु की परीक्षा ली जाए। उसने वीरबाबू की इस समस्या को उन्हें सौंप दिया।

तुम लोग क्या सोचते हो कि दोनों दरबारियों ने समस्या को कैसे सुलझाया होगा? क्या राजा अपने को तैयार कर सका? अपनी प्रवेशिकाएँ लिख भेजिए (हाँ ! यह अवश्य वास्तविक होनी चाहिए) अपनी प्रवेशिका के ऊपर लिखिए 'सृजनात्मक प्रतिस्पर्धा फरवरी-२००१' जो हमें २० फरवरी के पूर्व ही मिल जानी चाहिए।

खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि सितम्बर और अक्टूबर के लिए कोई भी समुचित प्रवेशिका प्राप्त नहीं हुई इसलिए कोई पुरस्कार भी नहीं दिया जा रहा।

- संपादक

अपने भारत को जानो - उत्तर जनवरी का

१. २६ जनवरी १९५२
२. भारत के राष्ट्रपति
३. केन्द्रीय रक्षा मंत्री
४. विजय चौक से लाल किला तक
५. इण्डिया गेट पर स्थित अमर जवान ज्योति, जहाँ पर प्रधानमंत्री शहीदों की याद में फूलों का हार चढ़ाते हैं।
६. पदक वितरण, जब भारतीय प्रधानमंत्री सैनिकों के बलिदान और त्याग के लिए वीर चक्र, तथा अशोक चक्र प्रदान करते हैं।
७. गणतंत्र नाईजीरिया के राष्ट्रपति श्री ओलूसेगेन ओबासेन्जो।
८. विभिन्न क्षेत्रों जैसे - धर्म, संस्कृति और परम्परा में अविस्मरणीय योगदान के द्वारा।
९. जो बच्चे बहादुरी का इनाम प्राप्त करते हैं। सबसे पहले उन्हें सजीली हाथी पर बैठाकर ले जाया जाता है।
१०. यदि मौसम अच्छा होता है तो हवाई जहाज की कलाबाजी।
११. बीटिंग रीट्रीट सेरेमनी विजय चौक पर २९ जनवरी की शाम मनाई जाती है जो शहीदी दिवस ३० जनवरी का भी प्रतिनिधित्व करती है।
१२. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ४४वां सत्र ३१ दिसम्बर १९२९ लाहौर में हुआ। जिसमें यह निर्णय लिया गया कि २६ जनवरी १९३० स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा। जवाहरलाल नेहरू ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

वेताल कहानी

सहायता संतोष

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। यथावत् पेड़ पर चढ़ गया और पेड़ पर से शव को उतारा। उसे अपने कंधे पर डाल लिया और श्मशान की तरफ़ अग्रसर होने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, "राजन...! आधी रात का समय है, तिसपर यह श्मशान है। यहाँ भूत-प्रेत स्वच्छन्द घूमते रहते हैं। किसी भी क्षण वे तुम्हारा अहित कर सकते हैं। आश्चर्य की बात है कि फिर भी निर्भीक होकर तुम इस भयंकर श्मशान में घूम-फिर रहे हो, मानो कोई भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता! मेरी समझ में नहीं आता कि किसकी सहायता करने के उद्देश्य से इतना खतरा मोल रहे हो! अपने प्राणों की बाजी लगा रहे हो। तुमने किसी की

सहायता भी की तो इसका क्या भरोसा कि वह आदमी संतृप्त होगा, जिसकी सहायता करने पर तुम तुले हुए हो। इससे समस्या का समाधान होगा नहीं और तुम्हारा श्रम भी व्यर्थ हो जाने की संभावना है। उदाहरण के लिए मैं तुम्हें शंभू की कहानी सुनाऊँगा। वह बड़ा ही सुशील व परोपकारी था। अपनी थकावट दूर करते हुए ध्यान से उसकी कहानी सुनो।" फिर बेताल शंभू की कहानी सुनाने लगा।

शंभू संपन्न नहीं था, परंतु खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। वह पढ़ा-लिखा नहीं था। वह अपने हाथों गुड़ियाँ बनाना चाहता था, गाना चाहता था। उसकी इसी मनोव्यथा को देखते हुए उसके दादा ने उससे एक बार कहा, "अरे शंभू, दुनिया में बड़े-बड़े कर्मों को करने से महान है किसी की भलाई करना, अच्छा करना। तुम बहुत ही अच्छे आदमी हो। तुम्हारा मन स्वच्छ है। तुम सद्गुणी हो। यही तुम्हारा भाग्य है। चिंता छोड़ दो और संतुष्ट रहो।"

"इसका क्या सबूत है कि मैं अच्छा हूँ?" शंभू ने पूछा।

दादा ने हंसकर कहा, "अच्छाई का अर्थ है, निःस्वार्थ होना, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या का न होना। अन्यों की महानता को देखकर तुम जलते नहीं हो, बल्कि तुम्हें आनंद आता है। दूसरों को संतुष्ट देखने के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हो। दूसरों की भलाई करके अपने सप्रयोजन को भी त्यागने की तुम्हारी प्रवृत्ति है। ऐसे कितने ही सद्गुण तुममें भरे पड़े हैं।"

राम जब कभी भी भगवान के चरणों में झुकता है तब उसकी यही प्रार्थना होती है कि घर के लोग स्वस्थ रहें, दीदी की शादी हो, बड़े भाई को अच्छी-सी कोई नौकरी मिल जाए। कभी भी उसने अपने लिए भगवान से कुछ नहीं माँगा।

जवाब में शंभू ने अपने दादा से कहा, "दादाजी! अपने घर के लोगों का कल्याण चाहूँ, इसमें क्या बड़प्पन है? मेरी दृष्टि में यह मेरा स्वार्थ ही हुआ। इससे घर के लोगों को छोड़कर बाहर के लोगों को क्या लाभ पहुँचता है? अगर कलाकार बनता तो दूसरों को प्रसन्न करता, उनके हृदय में उल्लास भरता।"

"दूसरों के उल्लास के लिए, उन्हें आनंद पहुँचाने के लिए यह कोई ज़रूरी नहीं कि तुम कलाकार बनो। भलाई करो भलाई।" दादा ने उससे कहा।

दादा की बातें शंभू के मन में टिक गयीं। तब से लेकर वह यथासाहस भलाई करने लगा। किन्तु उसकी चिंता दूर नहीं हुई।

एक दिन उसके घर उसका एक रिश्तेदार आया। शंभू के अच्छे स्वभाव के बारे में उसने

बहुत सुन रखा था। उसे अपना दामाद बनाने के उद्देश्य से वह आया था। उसकी पुत्री पार्वती सुंदर, विनम्र और बुद्धिमान थी। शंभू के घर के लोगों को इस बात पर खुशी हुई कि ऐसी सुशील लड़की बहू बननेवाली है। किन्तु शंभू ने साफ़-साफ़ कह दिया कि वह शादी करने के पक्ष में नहीं है।

पार्वती के पिता ने आश्चर्य प्रकट करते हुए शंभू से पूछा, "यह तो बताओ, तुम शादी करना क्यों नहीं चाहते ?" उसने जवाब दिया, "मैं निकम्मा हूँ। मुझे कोई भी विद्या नहीं आती। अपने को किसी भी काम के लायक़ नहीं समझता।"

"खेती जो कर रहे हो। इससे बढ़कर और क्या चाहिये?", पार्वती के पिता ने कहा।

"परंतु उसमें मैं अपनी अक्ल थोड़े ही लड़ा रहा हूँ। पिताजी जो कहते हैं, उसे ही बस, अमल में ला रहा हूँ। स्वयं कुछ करने की योग्यता मुझमें नहीं है", शंभु ने कहा।

"ऐसा मानना ही तुम्हारा बड़प्पन है। खेती कोई एक ही दिन में नहीं सीखता। अनुभव प्राप्त करोगे तो तुम अच्छे किसान कहलाये जाओगे। उस दिन तुम्हें बड़ी खुशी होगी" पार्वती के पिता ने उसे समझाया।

"खुशी और मुझे? खुश रहना मुझे आता ही नहीं। जब मैं खुद खुश नहीं रह सकता तब शादी करके अपनी पत्नी को कैसे खुश रख सकूँगा?" शंभू ने कहा।

पार्वती का पिता चुप रह गया। दो दिन वहीं रहकर वह शंभू की दिनचर्या ध्यान से देखने लगा। उस गाँव में उसके जो छोटे-छोटे काम थे, उन्हें पूरा करके जब वह लौटने लगा, तब उसने शंभू से कहा, "शंभु, तुम मेरे साथ मेरे गाँव आना। मैं तुम्हें वहाँ संतुष्ट रहने का मार्ग दिखाऊँगा।"

शंभु ने यह प्रस्ताव मान लिया। उसके मन में पार्वती को एक बार देखने की तमन्ना थी। वह पार्वती के पिता के साथ उसके गाँव गया।

पार्वती की चुस्ती व सदा प्रसन्न रहने के उसके स्वभाव ने उसकी सुंदरता में चार चांद लगा दिये। उसे देखते हुए शंभू में भी सदा संतुष्ट रहने की इच्छा जगी। घर पहुँचकर थकावट दूर करने के बाद पार्वती के पिता ने गाँव में जाते हुए शंभू से कहा, "मैं तुम्हारे गाँव से इन गाँववालों के लिए कुछ शुभ समाचार ले आया हूँ। वे इन समाचारों को सुनकर बहुत ही संतुष्ट होंगे। अन्यों को संतुष्ट देखना तुम्हें भी बहुत पसंद आता है न? तो चलो मेरे साथ।"

पार्वती ने भी उनके साथ जाने की ज़िद की। तीनों को एक साथ जाते हुए देखकर शंभु मन ही मन बहुत खुश हुआ। पर वह खुशी ज़्यादा देर तक टिक नहीं पायी। वे गली से मुड़े कि नहीं, उन्हें

आठ साल का एक लड़का दिखायी पड़ा। वह बहुत ही दुःखी लग रहा था।

पार्वती ने उसे इस हालत में देखकर पूछा, "क्या हुआ लल्लू, क्यों इतने परेशान लग रहे हो?"

"रंगबिरंगी मेरी गोली झाड़ी में गिर गयी। ढूँढ़ने की कोशिश की तो सांप की फुफकार जैसी आवाज़ आयी। लगता है, वहाँ सचमुच साँप है", लल्लू ने कहा।

"तुम एकदम डरपोक हो। हवा में पत्ता दूसरे पत्ते से जब लग जाता है, तब ऐसी आवाज़ आती है।" फिर उसने अपने पिता से कहा, "पिताजी, गोली निकालने के बाद आगे बढ़ेंगे।"

"तुम्हारी यह आदत तुमसे कभी नहीं छूटेगी", कहता हुआ पार्वती का पिता आगे बढ़ा।

शंभू और पार्वती के पिता एक आसामी के घर गये। उसने घरवाले से कहा, "तुम तो बड़े भाग्यवान हो। अपनी बेटी की शादी को लेकर तुम परेशान थे न? चयन इस शादी के लिए मान गया और जो दहेज तुम दोगे, उसे लेने के लिए वह तैयार है", घरवाले ने खुश होते हुए कहा, "शुभ समाचार ले आये। पर गणपति ने क्या कहा?"

"वह तो पैसों के पीछे पागल है। नहीं लगता, वह इस रिश्ते को मानेगा", पार्वती के पिता ने कहा।

"ठीक है, हमारे भाग्य में जो बदा है, वही होगा", घरवाले ने कहा।

वहाँ से निकलकर दोनों एक और के घर गये। वहाँ एक युवक को देखकर पार्वती के पिता ने उससे कहा, "तुम कहते थे न कि जीवन में क्या कभी मुझे नौकरी मिलेगी? इस शंभू के गाँव के ज़मींदार के यहाँ उनकी दूसरी पत्नी के बच्चों को पढ़ाने का काम है। अब वे हर महीने दो सौ अशर्फ़ियाँ देने के लिए तैयार हैं। तुम्हारी लियाक़त को अच्छी तरह से परखने के बाद दीवान में भी नौकरी दिलवायेंगे।"

"मैंने तो सुना था कि ज़मींदार की पहली पत्नी की धाक दीवान में बहुत ज़्यादा ही है। उनके बच्चों को पढ़ाऊँगा तो अच्छी सी अच्छी नौकरी के मिलने की गुंजाइश है। क्या यह मुमकिन नहीं हो सकता ?" युवक ने आतुरता-भरे स्वर में पूछा।

"उन्हें तो संस्कृत पंडित चाहिए। तुम्हें संस्कृत नहीं आती है न?", पार्वती के पिता ने कहा।

"ठीक है, हमारे ललाट में जो लिखा है, वही हमें मिलेगा", युवक ने कहा। दोनों जब घर लौट रहे थे तो रास्ते में उसी जगह पर पार्वती मिली। उसने लल्लू की गोली ढूँढ़कर झाड़ी से निकाली। उसने अपने पिता से कहा, "पिताजी, मैंने गोली लल्लू को दे दी। परंतु हाँ, मेहनत करनी पड़ी।" वह

बहुत खुश दिखायी दे रही थी।

घर पहुँचने के बाद पार्वती के पिता ने शंभू से कहा, "पार्वती की खुशी का कारण जान गये?"

शंभू ने कहा, "इसमें समझ में न आनेवाली बात क्या है? गोली के मिल जाने पर लल्लू खुश हुआ। मेहनत करके पार्वती ने गोली ढूँढ़ निकाली, इस पर वह बेहद खुश हो, लेकिन जिस रिश्ते के बारे में आप उस घरवाले से बता रहे थे, लगता है, वह उतना संतुष्ट नहीं है। उस तरह वह युवक भी संतुष्ट नहीं दीखता, क्योंकि ज़मींदार की पहली पत्नी के बच्चों को पढ़ाने का मौका उसे मिलनेवाला नहीं है।"

लंबी सांस खींचते हुए पार्वती के पिता ने कहा, "परोपकार हम कर सकते हैं, परंतु उसके साथ-साथ किसी को संतुष्ट करना हमारे हाथ में थोड़े ही है।"

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा से कहा, राजन् ! मुझे संदेह होता है कि परोपकार और संतुष्टि के बारे में शंभू को बताकर पार्वती के पिता ने अपने वाक्-चातुर्य से उसे संतृप्त करने का प्रयत्न किया। मुझे लगता है कि स्वयं वह यह समझ नहीं पाया। शायद यह उसकी समझ के बाहर है। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

विक्रमार्क ने कहा, "पार्वती के पिता को उन व्यक्तियों की विभिन्न मानसिकताओं का बोध है। उस गृहस्थ को अपनी पुत्री के विवाह के संपन्न होने पर संदेह था। परंतु जब रिश्ते के पक्के होने का समाचार मिला तो वह कहने लगा कि क्या दूसरा जो इससे अच्छा रिश्ता है, वह तय नहीं हो सकता? उसी तरह जिसे नौकरी के मिलने की ही आशा ही नहीं थी, वह चाहता था कि जो नौकरी अब उसे मिली, उससे अच्छी नौकरी उसे मिले। केवल दूसरों को संतृप्त रखने के लिए परोपकार ही नहीं करना चाहिए बल्कि उनकी सहायता करके परोपकार करें। किसी की सहायता आसानी से की जा सकती है, लेकिन किसी को संतुष्ट करना सुलभकार्य नहीं है। पार्वती के पिता को इस जीवन सत्य का ज्ञान है। इसलिए तुम्हारा यह कहना निराधार है कि उसकी बातों में केवल वाक्-चातुर्य है या वह समस्या की गहराई में नहीं गया।"

राजा के मौन भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

इस माह जिनकी जयंती है

भारतीय कोकिला के नाम से प्रसिद्ध कवियित्री सरोजिनी नायडू का जन्म १३ फरवरी १८७९ में हैदराबाद में हुआ। उन्होंने अपनी प्रथम कविता ग्यारह वर्ष की आयु में लिखी। एक दिन छोटी सरोजिनी अपनी कक्षा में गणित प्रश्न पर ध्यान न देकर कविता लिखने लगीं। बाद में उन्होंने बताया कि वह पहली कविता स्वतः बन गई।

उनके पिता अघोरेनाथ चट्टोपाध्याय सरोजिनी के और उनकी कविताओं के प्रेरणा स्रोत थे। वे भी उर्दू और बंगला के कवि थे। उनकी माता बरदासुन्दरी देवी एक बहुत अच्छी गायिका थीं और बंगला में गाने भी लिखा करती थीं।

उनके समय के महान व्यक्तियों जैसे कि आर्थर सेमन और एडमन गोसे के पत्रों ने उनकी कविताओं को स्वर दिया। उनका पहला कविता संकलन 'द गोल्डेन थ्रेशहोल्ड' आलोचकों द्वारा सराहा गया।

जब वह केवल १३ वर्ष की थीं तो काफी बीमार हो गयी थीं। डॉक्टर ने उन्हें पढ़ने से बिल्कुल मना कर दिया था। परन्तु वैसी हालत में भी सरोजिनी ने २,००० लाईनों का एक नाटक लिख डाला।

परिवार के सदस्यों द्वारा विरोध किए जाने पर भी उन्होंने डॉ.गोबिन्दराजुलु नायडू से १८९८ में विवाह किया जो एक अन्तरजातीय विवाह था। हैदराबाद में रहते हुए उन्हें मुसलमान जनता के साथ सम्पर्क रखने का अवसर मिला।

आगे चलकर जब राष्ट्रीय भाषाओं में से उर्दू को निकालने की बात सामने आयी तो सरोजिनी ने इसके विरोध में दृढ़ता से आवाज उठाई। वे लोगों की भावनाओं को कभी आघात नहीं पहुँचाती थीं।

सरोजिनी ने नारी अधिकार के लिए भी संघर्ष किया। उनका विश्वास था कि नारी को पढ़ा-लिखा होना आवश्यक है जो उसके जीवन का रूप बदल सकता है। उन्होंने नारी मतदान अधिकार पर भी बल दिया।

राजनीति में आने से पहले उन्होंने गांधीजी के साथ दक्षिणी अफ्रीका में चल रही व्यवस्था के खिलाफ कार्य किया। गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें भारतीय राजनीति में

सरोजिनी नायडू

प्रवेश कराया। १९१९ में वे अखिल भारतीय घृह कानून लीग की सदस्या के रूप में लंदन गईं और वहाँ नारी अधिकार विषय पर भाषण दिया। उन्होंने जलियांनवाला बाग के निर्मम हत्या कांड के कारण १९०८ में उनकी समाज सेवा के लिए घोषित 'कैसर-ए-हिन्द' सम्मान लेने से मना कर दिया।

१९२५ में कानपुर के राष्ट्रीय कांग्रेस के सत्र में उन्होंने अध्यक्षता ग्रहण की। उनके अध्यक्षीय भाषण ने लोगों में स्वतंत्रता का दीप जला दिया। नमक सत्याग्रह के दौरान उनके साहस और शक्ति ने लोगों को उस परिस्थिति का सामना करने के लिए दृढ़ बनाया।

१९४२ में जब गाँधीजी को 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय पुने के आगाखान किले में बंदी बना लिया गया था तब सरोजिनी भी वहाँ थीं। उन्होंने अपने हँसमुख स्वभाव से सबको खुश कर रखा था। रॉबर्ट बेर्नरी ने अपनी पुस्तक 'द नैकेड फकीर' में सरोजिनी को 'महात्मा के छोटे न्यायालय की न्यायालय ठिठोलिया' कहा।

स्वतंत्रता के तुरंत बाद जब उन्हें वर्तमान उत्तरप्रदेश का गवर्नर पद दिया गया तो उन्होंने उसे पसंद नहीं किया। क्योंकि वह किसी एक कार्य के लिए बंधकर नहीं रहना चाहती थीं। फिर भी उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया और पूरी इमानदारी के साथ कार्य किया। २ मार्च १९४९ में इस सहृदया का देहान्त हो गया।

यक्ष पर्वत

2

(लुटेरों के सरदार ने स्वर्णाचारी नामक एक वास्तुविद् को अपने अधीन कर लिया। उसके द्वारा जंगल के एक कुटीर में रहनेवाले दो क्षत्रिय युवकों के बारे में जानकारी प्राप्त की। जब लुटेरा स्वर्णाचारी को पकड़कर ले जा रहा था, तब वह चिल्लाने लगा। उसकी यह चिल्लाहट बिघ्नेश्वर पुजारी ने सुनी। उसने क्षत्रिय युवकों के पालतू शेर को लुटेरों पर आक्रमण करने के लिए उकसाया। शेर एक लुटेरे पर झपट पड़ा और उसका गला पकड़ लिया। अब इसके आगे...)

गरजते हुए शेर के आकस्मिक आक्रमण को देखकर लुटेरों का सरदार घबरा गया। एक क्षण भर तक वह सोचता रहा कि अब क्या किया जाए? फिर उसने तुरंत अपना भाला उठाया और शेर पर फेंका। भाला शेर से एक फुट की दूरी पर ज़मीन पर जा गिरा। परंतु शेर लुटेरे का गला पकड़े ही रहा और उसे इधर-उधर हिलाता रहा। लुटेरों के सरदार ने इर्द-गिर्द देखा। वह अपने को असहाय-महसूस करने लगा। ऊँट पर सवार जो लुटेरा नीचे गिर गया था, उसका ऊँट घबराकर क्षत्रिय युवकों के कुटीर के पीछे की ओर भागने लगा। एक और अनुचर के ऊँट पर बैठा स्वर्णाचारी सहायता माँगते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा।

लुटेरों का सरदार नाराज़ी से देखते हुए स्वर्णाचारी से बोला, "अरे...ओ वास्तुविद्, अब ही सही, चुप हो जा। चुपचाप हमारे साथ आ जा...! नहीं तो ऊँट से गिरा दूँगा और तुझे इस शेर का आहार बना दूँगा।"

उसके इस सवाल से स्वर्णाचारी बहुत खुश हुआ। क्योंकि उसे मालूम था कि शेर

उसका कुछ नहीं बिगाड़ेगा। उसने भयभीत हो जाने का नाटक करते हुए कहा, "उष्टनायक, मुझे सिंह का आहार बनाकर फेंक दीजिये। वैसे ही सही, जन्मभूमि पर प्राण देकर पुण्य कमा पाऊँगा। जन्मभूमि से बढ़कर प्रिय भला और क्या हैं?"

लुटेरों के सरदार को लगा कि स्वर्णाचारी को नीचे गिराना ही उत्तम होगा। किन्तु उसे तुरंत पहाड़ों के आंचल में स्थित अपनी राजधानी याद आयी।

इसलिए उसने अपने एक अनुयायी से कहा, "देखो, इसे नीचे न गिराना। जिस पर्वतदुर्ग का हम निर्माण करना चाहते हैं, उसके लिए इसकी आवश्यकता पड़ेगी। वहाँ ले जाने के बाद इसने हमारी बात नहीं सुनी तो वहीं इसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।"

सरदार की ये बातें सुनकर स्वर्णाचारी भय से काँप उठा। वह सिंह को 'भीम, भीम' कहकर संबोधित करते हुए ज़ोर-ज़ोर से 'मुझे बचाओ, मुझे बचाओ' कहकर चिल्लाने लगा।

अपना नाम सुनते ही सिंह भीम गरजता हुआ स्वर्णाचारी के ऊँट की तरफ़ बढ़ा। लुटेरे ने ख़तरे का अंदाजा लगाया और ऊँट को लात मारकर ज़ोर से हांका। ऊँट ज्वार के खेतों की ओर तेज़ी से भागने लगा। उसके पीछे-पीछे सरदार भी अपने ऊँट को तेज़ी से चलाता हुआ भागा।

कुटीर के पीछे छिपा हुआ विघ्नेश्वर पुजारी यह सब कुछ देख रहा था। स्वर्णाचारी का इस प्रकार लुटेरों के काबू में आ जाने पर उसे दुःख हुआ।

अरण्य में आखेट समाप्त करके तभी दोनों क्षत्रिय युवक लौट रहे थे।

जब वे दोनों कुटीर के समीप पहुँच रहे थे तब विघ्नेश्वर पुजारी दौड़ा-दौड़ा उनके पास गया और कहने लगा, "महावीरों, खड्गधारियों, सर्वनाश हो गया! जो नहीं होना था, वह हो गया। अब तुम्हीं उसकी रक्षा कर सकते हो।"

क्षत्रिय युवकों में से एक युवक ने तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए पुजारी से पूछा, "किसका सर्वनाश हो गया? यह भीम कैसे पिंजरे में से बाहर आया?", अपने पास आये सिंह को दिखाते हुए उसने पूछा।

विघ्नेश्वर पुजारी ने वहाँ घटी घटना का सविस्तार से वर्णन किया और कहा, "योद्धाओं, कुटीर के पास जल्दी चलिये। वहाँ सिंह के पंजे से मरे लुटेरे को स्वयं देख भी सकते हो।"

दोनों युवक पुजारी के पीछे-पीछे गये। पुजारी उन्हें मरे पड़े लुटेरे के पास ले गया और कहा, "शत्रु के इस शव को देखिये, हमारे भीम के पंजे की चोट से यह मर गया।"

क्षत्रिय युवक जीवदन्त्र ने उस शव को ग़ौर से देखा और कहा "यह जंगली जाति का आदमी नहीं है। पहनावे व मुख लक्षणों को देखते हुए लगता है कि कहीं दूर प्रांत से इस जंगल में आया है।"

"अगर यह बच जाता तो इससे जान लेते कि यह कहाँ का है और यहाँ क्यों आया ?", खड्गवर्मा ने कहा।

"खड्ग...! इन लुटेरों के बारे में हमें जानना होगा। हमें उनका पीछा करना होगा। गण्डकमृग जातिवालों में से किसी ने अवश्य देखा ही होगा कि ये किस दिशा में भाग गये।" जीवदंत्र ने खड्ग वर्मा से यह कहकर पुजारी से कहा, "तुम जाओ और गण्डकमृग जातिवाला कोई दिखायी पड़े तो उसे अपने साथ ले आना।"

विघ्नेश्वर पुजारी थोड़ी दूर भी गया कि नहीं, उसे गण्डकमृग जाति का नेता अरण्यमल व उसके अनुगामी दिखायी पड़े। वे आपस में ज़ोर-ज़ोर से वाद-विवाद कर

रहे थे।

पुजारी ने उनके पास आकर उनसे कहा, क्षत्रिय युवक अभी-अभी शिकार पूरा करके लौटे हैं। ऊँटों पर सवार होकर आये लुटेरों को आपमें से किसी ने देखा ? वे मेरे प्रिय मित्र स्वर्णाचारी का अपहरण करके ले गये।"

"पुजारी जी, उन्होंने हमारी फ़सलों का नाश किया और उन्हें लूटकर भी ले गये। दोनों खड्ग और जीवदंत्र प्रभु अब कहाँ हैं ?"

फिर वे पुजारी के साथ-साथ गये। कुटीर के पास आने के बाद वे दोनों युवकों से मिले। अरण्यमल ने उनसे कहा, "खड्ग और जीवदंत्र प्रभुओं, लुटेरे हमारी फ़सल लूटकर ले गये। उनका सामना हम नहीं कर सके। हमारे वीर अरण्यपुर वापस चले गये!"

"छी...! छी...! राजा होकर तुम लुटेरों

के सामने टिक न पाये? कितनी शरम की बात है। तुम्हारी कायरता देखकर तुम्हारे अनुयायी, तुम्हारे बारे में क्या सोचेंगे?'', खड्ग बर्मा ने नाराज़ होते हुए कहा।

''नाराज़ इन पर नहीं, मुझ पर होइये, क्योंकि वे उस समय वहाँ नहीं थे, मैं ही था।'', कहता हुआ शिलामुखी उन युवकों के सामने आया।

''ऐसी बात है ? अच्छा, अब यह बताओ कि उन्होंने क्या किन्हीं नये हथियारों का इस्तेमाल किया, जिनसे हम अपरिचित हैं ? या ऊँटों को देखकर आपके गण्डक मृग भय के मारे भाग निकले ?'', जीवदंत्र ने पूछा।

शिलामुखी ने पूरा विवरण देने के बाद कहा, ''उन लुटेरों के पास तलवारों और भालों के अतिरिक्त कोई और हथियार नहीं थे। किन्तु आप जिन ऊँटों का ज़िक्र कर रहे हैं, उन्हें देखकर हमारे लोग डर गये।''

''ठीक है...! जो हो गया, सो हो गया। स्वर्णाचारी को लुटेरों से बचाकर लाना हमारा कर्तव्य है। तुम लोगों में से कुछ लोग अभी जाइये और पता लगाइये कि वे किस तरफ़ गये हैं'', जीवदंत्र ने कहा।

अरण्यमल ने वहीं अपने अनुचरों को आदेश दिया कि वे निकल पड़ें और पता लगायें कि शत्रु किस दिशा में चले गये।

सूर्यास्त हो गया और धीरे-धीरे अंधेरा फैल रहा था। खड्ग और जीवदंत्र ने खाना बनाया और खाने के बाद कुटीर से बाहर आये। उस समय गण्डकमृग जाति वाला एक आदमी वापस आया, जो शत्रु की खोज में गया था। वह हाँफ रहा था।

उसे देखते ही राजा अरण्यमल ने आतुरता-भरे स्वर में उससे पूछा, ''क्या लुटेरे दिखायी पड़े? वे तीनों कहाँ हैं, जो तुम्हारे साथ-साथ गये थे?''

गण्डकमृग जातिवाले ने संक्षेप में कह दिया कि लुटेरे पहाड़ी नदी की उलटी दिशा में बढ़े जा रहे हैं। यही बताने के लिए वह उन तीनों को छोड़कर चला आया।

जीवदंत्र ने पूछा, ''बाकी तीनों क्या लुटेरों का पीछा कर रहे हैं ?'' ''हाँ सरकार, हम जब तक वहाँ नहीं जायेंगे, तब तक वे उन पर निगरानी रखेंगे'', उसने कहा।

जीवदन्त्र ने अपनी तरफ़ से निर्णय ले लिया और खड्गवर्मा से कहा, ''खड्ग, अब हम निकल पड़ें। अच्छा यही होगा कि हम अंधेरा छा जाने के बाद ही उस प्रदेश में पहुँचे। जो भी हो, आज रात ही को स्वर्णाचारी को छुड़ाना होगा।''

जब वे दोनों क्षत्रिय युवक अपनी तलवारें व धनुष-बाण लेकर निकल पड़े तब विघ्नेश्वर पुजारी चिल्ला पड़ा,

''हमारे सिंह भीम ने जिस लुटेरे को मार डाला था, उसका ऊँट यहीं कहीं होगा। उस पर सवार होकर जाना अच्छा होगा। उसे ढूँढ़िये !''

यह बात सुनते ही चार गण्डक मृग जातिवालों ने ऊँट को ढूँढ़ना शुरू किया। आस-पास में ढूँढ़ते वे थक गए। फिर एक झाड़ी के पास बैठा हुआ ऊँट उन्हें मिला। पंद्रह मिनिटों में वे उस ऊँट को पकड़कर ले आये। लुटेरों की ख़बर लाया गण्डकमृग जातिवाला आगे-आगे जाने लगा और दोनों युवक ऊँट पर सवार होकर उसके पीछे-पीछे जाने लगे।

जंगल में थोड़ी दूर जाने के बाद उन्होंने देखा कि नदी तट की एक पहाड़ी के पास लुटेरे रसोई बनाने के काम में लगे हुए हैं। सारे लुटेरे थके-थके दिखाई पड़ रहे हैं। कुछ ऊँटों की देखभाल कर रहे है तो उनमें से कुछ लोग सूखी लकड़ियों को ढूँढ़ते हुए पेड़ों के बीच घूम-फिर रहे हैं।

''जीव, हमें पहले यह जानना होगा कि उन्होंने स्वर्णाचारी के साथ क्या किया? हम सूखी लकड़ियाँ ढूँढ़नेवाले किसी लुटेरे को सजीव पकड़ लेंगे तो यह विषय मालूम हो जायेगा।'', खड्गवर्मा ने कहा।

''हाँ, आपने ठीक कहा। यह चाल अच्छी लगती है। अपने साथ एक को ले जाओ।

लेकिन किसी भी हालत में उन्हें मालूम न हो कि हम यहाँ छिपे हुए हैं'', जीवदंत्र ने उसे सावधान करते हुए कहा।

खड्गवर्मा, गण्डकमृग जातिवाले एक आदमी को अपने साथ ले गया। जल्दी ही सूखी लकड़ियों को बटोरने में मग्न एक लुटेरे को उसने देखा। लेकिन वह पहले उसे देखता, इसके पहले ही चालाकी से उसे पकड़ने का उपाय सोचने लगा।

खड्गवर्मा को एक उपाय सूझा। उसने देखा कि लुटेरा सिर्फ सूखी लकड़ियाँ ही बटोर नहीं रहा हैं, बल्कि पेड़ों की उन शाखाओं को भी अपना पूरा बल लगाकर तोड़ रहा है, जिनके सूख जाने का उसे अनुमान है।

खड्ग वर्मा ने गण्डकमृग जातिवाले से एक सूखी शाखा तुड़वायी और जैसे ही धड़ाम् से वह गिरी, दोनों पेड़ के पीछे जाकर छिप गये। सूखी लकड़ी के टूटने की आवाज सुनकर लुटेरा उसे लेने वहाँ आया। उसे संदेह नहीं हुआ, इतनी बड़ी शाखा क्योंकर टूटी और कैसे टूटी! क्योंकि वह जल्दी में था।

जब लुटेरा झुककर सुखी लकड़ी अपने हाथ में लेने लगा तब खड्गवर्मा पीछे से उसपर गिर पड़ा और उसके गले को अपने दोनों हाथों से ज़ोर से पकड़ लिया। गण्डक जातिवाले ने भी तुरंत अपना भाला उसकी छाती पर रख दिया और इशारे से बता दिया कि अगर वह चीखेगा या चिल्लायेगा तो उसकी जान की ख़ैर नहीं।

भय से काँपते हुए लुटेरे को खड्गवर्मा ने गला पकड़कर खड़ा कर दिया और उससे कहा, ''चुपचाप मेरे पीछे-पीछे चले आओ। तुझे मैं नहीं मारूँगा। तुमने अगर अपने लोगों को सावधान करने की कोशिश की तो तुम्हें यहीं चीर डालूँगा।''

लुटेरा एकदम चुप रहा और खड्गवर्मा के साथ जाने लगा। लुटेरे को देखकर जीवदंत्र बहुत ही खुश हुआ और उससे कहा, ''तुम लोगों ने पहाड़ी नदी के पास फ़सलों को बरबाद किया और लूटकर ले गये। उस समय तुम लोगों ने स्वर्णाचारी नामक एक आदमी को पकड़ लिया था। अब वह कहाँ है? तुमने उसका क्या किया?''

लुटेरा काँपता हुआ बोला, "सच कहूँगा तो क्या आप मुझे छोड़ देंगे ?" जीवदंत्र ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, "अवश्य!"

"साहब, वह आदमी 'बचाओ, बचाओ' कहकर चिल्लाता रहा। हमारे सरदार नाराज़ हो गये और ज्वार के गोते में उसे बंद कर दिया। अब वह उन सामानों के बीच पड़ा हुआ है, जिन्हें हमने नदी के किनारे ऊँटों से उतारा था। मैंने जो भी कहा, सच है।"

"जब तक हम विश्वास नहीं कर लेते कि तुमने सच कहा या झूठ, तब तक तुम्हें इस पेड़ से बांधकर रखेंगे तुम चिल्ला न पाओ, इसके लिए तुम्हारा मुँह सूखी पत्तियों से भर देंगे", जीवदंत्र ने कहा।

फिर दोनों खड्ग और जीवदंत्र पेड़ पर चढ़ गये और उस जगह को देखने लगे, जहाँ लुटेरे ठहरे थे। अचानक खड्गवर्मा ने देखा कि लुटेरों के पास ही की पहाड़ी गुफा में मशाल जल रही है।

उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "जीव, यह क्या? देख रहे हो, उस पहाड़ी गुफ़ा से दीखती मशाल की कांति? विकृत आकार का वह आदमी कौन है, जिसके सारे शरीर पर जटाएँ फैली हुई हैं? उससे भी अधिक विकृत आकारवाला कोई उसे अपने मंत्रदंड से पीट रहा है!"

जीवदंत्र ने उस गुफ़ा की ओर ग़ौर से देखा। खड्गवर्मा के कहे अनुसार गुफ़ा में मशाल जल रही है। उसने उसकी कांति में देखा, शरीर भर में जटाएँ फैलाकर एक विकृत आकारवाला व्यक्ति वहाँ बैठा हुआ है और काले कपड़े पहने हुए एक मांत्रिक भी वहाँ उपस्थित है, जो अपना मंत्रदंड लुटेरों की ओर किये हुए है।

खड्ग और जीवदंत्र दोनों आश्चर्य भरी दृष्टि से उन विचित्र मानवों को देखने लगे। तब वह विकृत आकारवाला अचानक ज़ोर से चिल्ला पड़ा और वह चिल्लाहट जंगल भर में गूँज उठी। वह गुफ़ा से बाहर कूद पड़ा और लुटेरों की तरफ़ तेज़ी से बढ़ने लगा। उसके माथे पर अग्निकण जैसी कोई ज्योति चमक और बुझ रही थी। **(क्रमशः)**

भारत की

एक महान सभ्यता की झांकियाँ
युग-युग में सत्य के लिए इसकी गौरवमयी खोज

१३. लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग

"दादाजी, ध्रुव की कहानी बहुत प्रेरक थी। क्या इसका मतलब यह है कि प्रार्थना कभी उस सीमा पर पहुँचकर भगवान को भी अपने समक्ष प्रस्तुत होने के लिए विवश कर देती है? मेरी इच्छा है कि मैं भी तपस्या करूँ, परन्तु आपको इसका मार्ग सुलझाना होगा। यह बड़ा ही मनोरंजक होगा कि मैं भगवान को अपने समक्ष प्रकट होते देख सकूँगा!" प्रोफेसर देवनाथ के साथ हुई अगली मुलाकात में संदीप ने कहा।

दादाजी हँसने लगे। "मेरे बच्चे तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर तो वही दे सकता है, जिसने भगवान को महसूस किया हो। भगवान का ज्ञान मात्र ही होना इसके लिए पूर्ण नहीं है।" उन्होंने कहा।

"मैं आपका मतलब नहीं समझा दादाजी, क्या भगवान को महसूस करनेवाले और भगवान का ज्ञान रखने वाले लोगों में कोई भिन्नता है?" संदीप ने पूछा।

"हाँ! भिन्नता तो इतनी है कि जितनी एक सागर के दो किनारों में। बहुत सारे लोग हैं जो भगवान के बारे में जानते हैं परन्तु बहुत कम लोग हैं जिन्होंने भगवान को महसूस किया है। मैं एक गाँव में पैदा हुआ था। पढ़ाई के लिए बहुत सालों पहले शहर में आया। मुझे चॉकलेट कहे जाने वाली जैसी वस्तु के बारे में कुछ-कुछ मालूम था। जैसे कि वह कई फलों से बनती है, कि इसका रंग गहरा होता है, कि यह मीठी होती है कि वह बहुत अच्छी तरह लपेटी हुई होती है। ऐसे ही। लेकिन शहर आने पर ही मुझे उसे खाने का अवसर मिला।

उससे मुझे सारी भिन्नता पता चली। यही महसूस करने वाली चॉकलेट थी। मैं तुम्हारे जैसे चतुर बच्चे के मुख पर जो मुस्कुराकर देख रहा हूँ, उससे आशा करता हूँ कि मैं तुम्हें संक्षिप्त में भगवान के बारे में जानने तथा उनको महसूस करने की भिन्नता को समझा सकूँगा।

दादाजी ने थोड़ा मौन रहने के बाद कहा, "अब तुम्हारे प्रश्न पर वापस आते हैं संदीप, जबकि मैंने भगवान को महसूस नहीं किया है फिर भी मेरा सामान्य ज्ञानेन्द्रियाँ कहती हैं कि मात्र तुम्हारे किसी मनोरंजन के लिए की गई तपस्या से भगवान प्रकट नहीं होते। यह तभी सम्भव है जब तुम सिर्फ उसके

विश्वावसु

गाथा

लिए करो। जब तुम यह महसूस करने लगो कि धरती पर उसके सिवा कुछ नहीं है, शक्ति, धन और यश, जब तुम्हें आकर्षित न कर सकें तो वह स्वयं तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत हो जाएँगे। और यह केवल एक दिन में नहीं होता है, इसके लिए कई वर्ष और एक जन्म भी कम हो सकता है। ध्रुव अपने पिछले जन्म में एक धर्मात्मा के पुत्र थे और भगवान में गहरी आस्था रखने वाले बालक थे। एक बार वे अपनी ही आयु के एक राजकुमार के मित्र बन गए, जो शक्ति और संपत्ति के बीच में रहता था। राजकुमार के रहन-सहन ने ध्रुव को प्रभावित किया और उसने सोचा कि राजकुमार होना कितने भाग्य की बात है। उसकी यह क्षणिक इच्छा उसे प्राप्त हुई। उसे राजकुमार का जन्म सिर्फ इसलिए मिला कि वह महसूस कर सके कि खुशी को पकड़कर नहीं रखा जा सकता।

चमेली ने पूछा, "क्या ध्रुव अपने पिछले जन्म के बारे में जानते थे?"

"नहीं ! लेकिन एक-एक करके उन्होंने जान लिया?" यह कहानी इस प्रकार है,...

एक बार जब वे एक साधू के साथ जंगल से होकर जा रहे थे, तो उन्हें अपने आध्यात्म प्राप्ति पर बड़ा गर्व हुआ। अन्ततः उन्हें एक छोटी आयु में ही भगवान का दर्शन हुआ जबकि बहुत से लोग वर्षों तक तपस्या करते रहते हैं। एक छोटे से मिट्टी के टीले की ओर संकेत करते हुए साधु ने कहा, "ध्रुव क्या तुम जानते हो कि उस वृक्ष के नीचे वह मिट्टी का टीला क्या है?" ध्रुव को पता नहीं था। साधू ने कहा, "अच्छा तो मैं बताता हूँ। वहीं वर्षों तक बैठकर तुमने ईश्वर का ध्यान किया था और अपना शरीर छोड़ दिया, यह तुमने सिर्फ एक बार ही नहीं अनेकों बार किया। यह टीला तुम्हारी गाड़ी गई हड्डियों से बना। ध्रुव आश्चर्य चकित हुए। उनका सारा अहंकार जाता रहा - हो सकता है यह मात्र एक

कहानी ही हो। लेकिन यह ईश्वर को जानने का सत्य प्रकट करता है, जो हमारे जीवन का परम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति एक जन्म में सम्भव नहीं है।" प्रोफेसर देवनाथ के स्रोता बच्चे बिल्कुल शांत बैठे थे। हो सकता है वे यह समझने की कोशिश कर रहे हों कि प्रोफेसर क्या कहना चाहते हैं और यह भगवान तक पहुँचने की विधि क्या है ! प्रोफेसर को यह पता ही नहीं था कि उनके पीछे उनकी बहू जयश्री उनके पीछे खड़ी है। उन्होंने जब उसकी आवाज सुनी तो पीछे देखा, "क्या यह आश्चर्य करने की बात नहीं है कि अहंकार मनुष्य में भगवान को पा लेने के बाद भी बना रहता है?"

ठीक है, बेटी, आदमी बहुत ही कठिन प्राणी है। क्या तुम्हें एक आम आदमी के जीवन में जो गुण होते हैं वे, और दूसरे में भिन्नता नहीं दीखती है? हमें दया और क्रोध एक ही व्यक्ति में मिलता है। हम देखते हैं कि एक व्यक्ति जो मूर्ख कहा जाता है, अचानक वह एक बुद्धिमान व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है और एक व्यक्ति जो अपने ज्ञान के लिए
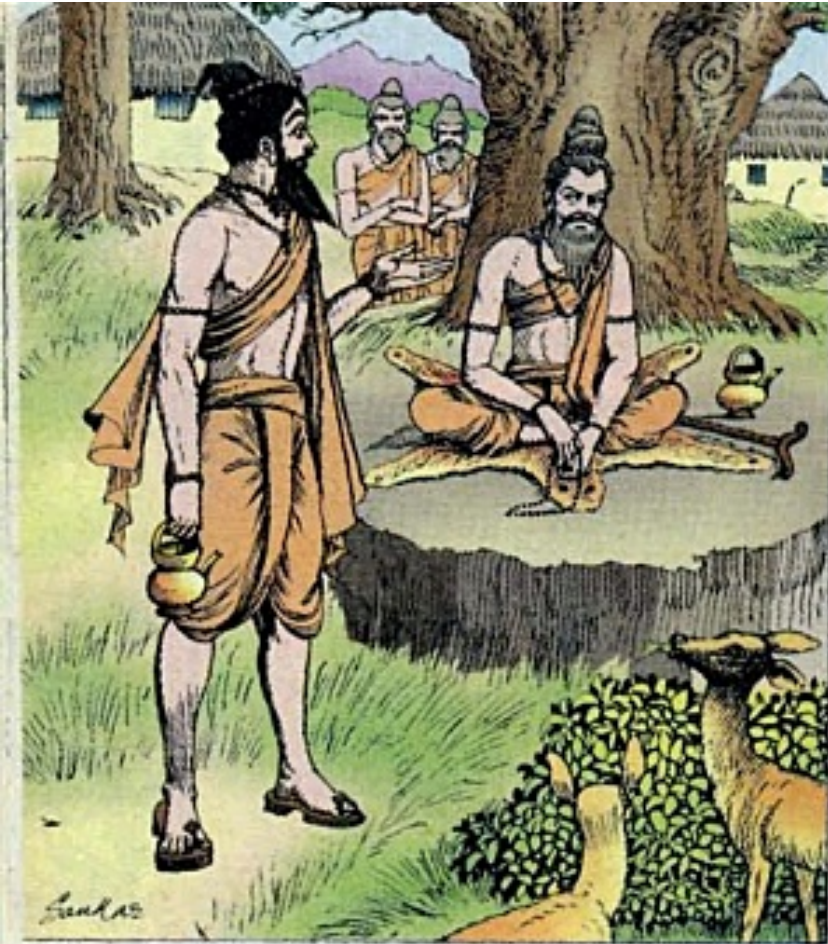
प्रसिद्ध है अचानक मूर्खता पूर्ण कार्य कर बैठता है। यदि अलग स्तर पर देखा जाय तो एक व्यक्ति जो आध्यात्म की सीमा पर पहुँच चुका है, हो सकता वह एक समय पर सामान्य आदमी की भांति व्यवहार करे। मैं यह बताना आवश्यक समझता हूँ कि ईश्वर को महसूस करना सभी के लिए एक जैसा अनुभव नहीं होता। बहुत सारे लोगों को थोड़ा बहुत अनुभव होता है। यह एक दम सत्य है कि पूर्ण रूप से ईश्वर को प्राप्त करने वाले व्यक्ति में अहंकार की भावना बिल्कुल नहीं होती। लेकिन जब कोई सिर्फ एक बार अपने भीतर ईश्वर को देखता है तो उसे एक आत्मा कहते हैं, जबकि उनका मस्तिष्क और उनकी भावना वैसी की वैसी ही रहती है।"

"उदाहरण के लिए दादाजी?" चमेली ने पूछा।

"क्या, तुमने महामुनि विश्वामित्र और बशिष्ठ का नाम सुना है? बशिष्ठ एक सिद्ध महात्मा थे, जब उन्हें ईश्वर का ज्ञान-हुआ परन्तु विश्वामित्र ईश्वर को प्राप्त करने हेतु अपने राजमुकुट को त्याग संत बन गए। वे बशिष्ठ से ईर्ष्या करते थे और चाहते थे कि उन्हें भी लोग बशिष्ठ की भाँति महान संत के रूप में जाने। लेकिन आध्यात्म में किसी से ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा करने पर लक्ष्य पूरा नहीं होता। इसीलिए विश्वामित्र को बशिष्ठ जितना महान बनने में इतनी कठिनाई हुई।

एक बार उन्होंने यह कहा कि बशिष्ठ उन्हें महाऋषि अथवा महान संत के नाम से प्रसिद्ध करें। बशिष्ठ ने उनकी बात नहीं सुनी। अपनी कमियों को न देखकर विश्वामित्र बशिष्ठ के प्रति अपने क्रोध को बढ़ाते गए। क्रोध और शत्रुता व्यक्ति को उस सीमा तक ले जाती है कि वह व्यक्ति स्वयं पर निमंत्रण नहीं रख पाता। यही विश्वामित्र के साथ भी हुआ। उन्होंने बार-बार बशिष्ठ पर दबाव डाला कि वे उन्हें महान संत के नाम से परिचित कराएँ, परन्तु बशिष्ठ ने बार-बार बड़े साधारण तरीके से मना कर दिया।

क्रोधित विश्वामित्र ने वह सब कुछ किया, जिससे वे बशिष्ठ को नीचा दिखा सकें। उन्होंने यहाँ तक किया कि उनके बेटे की हत्या कर दी। इसके बावजूद भी बशिष्ठ शांत रहे।

एक अंधेरी रात को जब विश्वामित्र समाधि में बैठे थे, तो उन्होंने परिस्थिति पर विचार किया। यदि दूसरे संत उन्हें महान संत की उपाधि नहीं देते हैं तो यह बशिष्ठ के कारण ही है। जो सभी में महान बने बैठे हैं और उन्हें महान बनाने से मना कर दिया। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो बशिष्ठ विश्वामित्र की लक्ष्य प्राप्ति में बहुत बड़ी बाधा थे। विश्वामित्र यह भूल गए कि किसी का अध्यात्म प्रसिद्धि पर निर्भर नहीं करता, लेकिन व्यक्तिगत संबंध भगवान पर निर्भर करता है। दुर्भाग्यवश उनका क्रोध और बढ़ गया और उन्होंने इस बाधा से छुटकारा पाने का निर्णय ले लिया।

अपने शासक के दिनों की स्मृति के साथ वे उठे और एक कटार लेकर, धीरे-धीरे वे बशिष्ठ के झोपड़ी की ओर गए। कटार की मूठ को उन्होंने कसकर पकड़ लिया और अपना कान दरवाजे पर लगाकर ध्यान से सुनने लगे कि भीतर सब कुछ शांत है या

नहीं !

उन्होंने वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती की आवाज सुनी। जो कह रही थीं कि इस महात्वाकांक्षी को महान संत की उपाधि दे दीजिए, जिससे यह हमें नुकसान पहुँचाना बंद कर दे। "ऐसे व्यक्ति को मना करने से क्या फायदा है, जिसने अपना राज्य-पाट त्याग दिया, जिसे उसने अपने सुख के लिए प्राप्त किया था।" अरुन्धती ने पूछा।

"मैं चाहता हूँ कि वह अपने राज्य से भी अधिक कीमती वस्तु का त्याग करे। राज्य एक नाशवान वस्तु है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि एक दिन वह उसे त्याग दे, जो अहंकार उसके भीतर जड़ कर गया है।" वशिष्ठ ने उत्तर दिया।

"लेकिन आपका एक शब्द उसे संतोष देगा और वह आपसे घृणा करना छोड़कर अपने आध्यात्मिक लक्ष्य पर ध्यान देगा।" अरुन्धती ने कहा।

"नहीं। वह अपने को बहुत ही सम्मानित समझने लगेगा और अपने लक्ष्य पर ध्यान नहीं देगा। वह उतने से ही संतोष प्राप्त कर लेगा। वह अपने कार्य में बहुत कुछ प्राप्त करने की क्षमता रखता है। मैं उसे सचमुच एक महान संत देखना चाहता हूँ, न कि उस स्थिति को प्राप्त करने से पूर्व ही वह अपने को महान समझने लगे।"

विश्वामित्र के हाथ से कटार गिर गयी। तभी उन्हें वशिष्ठ की महानता के बारे में ज्ञान हुआ, जो उसकी शत्रुता के बदले में उसका अच्छा सोच रहे थे। वे रोए और वशिष्ठ के पैरों पर गिर पड़े। उसके बाद उनमें बदलाव आया। वशिष्ठ की देख-रेख में उन्होंने अध्यात्म में ऊँचा स्थान प्राप्त किया।

दादाजी ने समझाते हुए कहा, "तो आप सभी ने देखा कि एक व्यक्ति को जागरूक बनाने के लिए बहुत-सी घटनाएँ घटती हैं। यह ऐसा नहीं है कि विश्वामित्र जब वशिष्ठ को मिटा देना चाहते थे तो उस समय उन्होंने कुछ कार्य नहीं किया। लेकिन कुछ ऐसा उनमें था जो अध्यात्म की ज्योति को छू नहीं पा रहा था। उनका वह भाग उस समय अउन्नत था। लेकिन सही समय पर उनका आध्यात्मिक गुण उनके सामान्य मानव के भाव पर छा गया और वे महान संत बने।

"यह क्या...? हम कभी भी आदमी को नहीं पहचानेंगे।" संदीप ने कहा।

"तुम आदमी को तभी समझ पाओगे, जब तुम स्वयं को समझ जाओगे।" प्रोफेसर देवनाथ ने कहा और एक वाक्य और जोड़ दिया-"चलो ! आज के लिए बस इतना ही।"

चतुर बहू

पढ़ाई के समाप्त होते ही शिवराम ज़मींदार की कचहरी में नौकरी पर लग गया। इसके छः महीनों के बाद उसने समझदार, सुंदर और सुशील नीरजा से विवाह कर लिया। उसने दहेज लिये बिना ही यह शादी कर ली। इस पर उसकी माँ अनसुईया बहू से नाराज़ थी। लेकिन घर आये रिश्तेदारों और अड़ोस-पड़ोस के लोगों से अपने बेटे की उदारता पर भाषण झाड़ती रहती थी। वह कहती थी कि उसका बेटा जैसा आदर्श पुरुष विरले ही देखा जा सकता है।

विजयदशमी त्यौहार के दिन नीरजा की छोटी बहन गिरिजा अपनी दीदी को देखने आयी। नीरजा को लगा कि इस अवसर पर अपनी बहन को एक अच्छी साड़ी भेंट में दूँ। उसने यह बात अपने पति से कही। शिवराम ने कहा तुम्हारा विचार अच्छा है, लेकिन तुम माँ के बारे में अच्छी तरह जानती हो। मुझ पर ताने कसेगी और यह कहने में भी नहीं झिझकेगी कि, "तुम्हारी पत्नी की हर बात तुम्हारे लिए लक्ष्मणरेखा बन गयी है, उसकी हर माँग को मानकर घर का नाश करते पर तुले हुए हो।"

शाम को शिवराम कचहरी से लौट आया तो नीरजा ने उसे एक उपाय बताया। शिवराम ने उसकी बात मान ली और दूसरे दिन कचहरी से लौटते हुए एक अच्छी साड़ी खरीदकर ले आया।

उस समय अनसुईया पड़ोसिन पार्वती से बातें करने में मशगूल थी। पार्वती ध्यान से उसकी बातें सुन रही थी। फिर उसने कहा, "बेटा हो तो ऐसा हो। अपनी पत्नी के लिए नयी साड़ी न खरीदकर तुम्हारे लिए नयी साड़ी ले आया है। इससे यह साफ़ है कि वह तुम्हें कितना चाहता है। अपनी माता के प्रति उसमें कितनी श्रद्धा-भक्ति है। इस विषय में तुम्हारे बेटे और बहू की दाद देनी चाहिए। फिर उसने शिवराम से कहा साथ ही अपनी साली के लिए भी नयी साड़ी खरीदकर ले आते तो कितना अच्छा होता।"

अनसुईया ने तुरंत अपने अच्छे स्वभाव का प्रदर्शन करने के उद्देश्य से कह दिया मैं तो कहने ही वाली थी कि गिरिजा के लिए भी एक साड़ी ले आओ। इसने तो मेरे मुँह की बात छीन ली। यही साड़ी उसे दे दो। त्योहार के दिन इसे वह पहन ले।" कहती हुई उसने वह साड़ी गिरिजा को दे दिया।

शिवराम और नीरजा अपने उपाय की सफलता पर बहुत प्रसन्न हुए।

\- सरोजिनी

बीसवीं शताब्दी में भारत

स्व सरकार से सर्वोच्च गणतंत्र तक - १९२३-१९५०

मई १९२३ में पुलिस ने कुछ कांग्रेसियों को नागपुर में गिरफ्तार कर लिया। वे लोग किसी भी प्रदर्शन और रैली में तिरंगा ले जाने के लिए सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंध के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे। जुलाई १८ को पूरे देश में झंडा दिवस मनाया गया। बाद में सरकार ने प्रतिबंध वापस ले लिया।

दिल्ली में हुए कांग्रेस के एक विशेष सत्र में, जिसके अध्यक्ष मौलाना अबुल कलॉम आजद थे, उसमें कांग्रेसियों को उनकी क्षमता के अनुसार विधान सभा का चुनाव लड़ने की अनुमति दी गयी। उस सत्र में यह भी निर्णय लिया गया कि अहिंसा सत्याग्रह आन्दोलन ही एक मात्र तरीका है जिससे सरकार के अत्याचारपूर्ण व्यवहार को रोका जा सके।

मौलाना आजद

१९२४ में यह महसूस किया गया कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे अन्य दलों में कोई ताल-मेल नहीं है। साथ-साथ कार्य करने के महत्व को ठेस लगती नजर आयी तो गाँधीजी ने स्वराज पार्टी के सभी नेताओं की एक बैठक बुलाई। इसमें निर्णय लिया गया कि असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया जाए।

बाद में कांग्रेस के बेलगाँव सत्र को संबोधित करते हुए गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन तथा नागरिक अवज्ञा आन्दोलनों को 'कल्प वृक्ष' की दो शाखाओं की भाँति बताया, जिनपर फल लग सकता है। इसमें यह भी निर्णय लिया गया कि हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया जाएगा और छूआ-छूत को समाप्त किया जाएगा।

पूर्ण स्वतंत्रता-की माँग

कांग्रेस के ५०वें सत्र की अध्यक्षा श्रीमती सरोजिनी नायडू ने की और कहा कि स्वतंत्रता-संग्राम में डर एवं संदेह का कोई स्थान नहीं है, यह मात्र स्वयं को धोखा देने की बात है। उन्होंने लोगों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए उत्साहित किया।

सरोजिनी नायडू

१९२६ के वार्षिक सत्र में एक और नया अनुभव हुआ, जिसमें अखिल भारतीय महाविद्यालय विद्यार्थी बैठक हुई। इसमें निर्णय लिया गया कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे सभी शिक्षा संस्थानों का बहिष्कार किया जाए। यह भी निर्णय लिया गया कि असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए जिन्होंने अपनी शिक्षा बीच में ही बंद कर दी थी, उनके लिए विद्यालय और महाविद्यालय आरम्भ किए जाएँ।

१९२७ में हुए मद्रास कांग्रेस सत्र में जवाहरलाल नेहरू द्वारा चलाया गया आन्दोलन, कि भारत तब तक विश्राम नहीं करेगा जब तक उसे पूर्ण स्वतंत्रता नहीं प्राप्त हो जाती है, स्वीकृत कर लिया गया। यह पहली बार था, जब इस प्रकार की माँग को अधिकारी संकल्प बनाया गया। सत्र में यह भी बल दिया गया कि साईमन कमीशन का विरोध करें, जो भारत में मिन्टो-मारली रिफार्मस की उन्नति को देखने आ रहा था।

१९२८ में दिल्ली में हुई सर्वदलीय बैठक में निर्णय लिया गया कि भारत के पास एक स्वतंत्र संविधान होना चाहिए। इसके लिए एक समिति भी बनायी गई जो मोतीलाल द्वारा संचालित थी कि वे संविधान की रूप-रेखा तैयार करें। रूपरेखा आगामी बैठक में प्रस्तावित की गयी। एम.ए. जिन्ना को छोड़कर सभी पार्टियों ने इसे स्वीकार कर लिया।

जिन्ना

जिन्ना का कहना था कुछ क्षेत्र मुसलमानों के लिए आरक्षित किए जाएँ। उनकी यह माँग नामंजूर कर दी गई। कुछ कांग्रेसियों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया कि भारत राजप्रभुत्व के स्तर से ही संतुष्ट हो पायेगा। जब अनुभवी नेता गाँधीजी ने यह स्वीकार कर लिया तो नए-नए नेता जवाहरलाल

तथा सुभाषचन्द्र बोस ने सम्पूर्ण स्वतंत्रता की माँग की।

१९२८ में स्वतंत्रता संग्राम ने तब एक नया मोड़ लिया जब सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा संचालित गुजरात के किसानों ने सरकार को कर न देने का निर्णय ले लिया। वे लोग कर वसूल करने वालों के भोजन और यातयात साधनों को भी अस्वीकार करने की सीमा तक चले गए। सरकार ने उन लोगों के चल सम्पत्तियों को जब्त कर लिया और उनकी कृषि योग्य भूमि को भी सील कर दिया। विरोध प्रदर्शन तब वापस लिया गया जब सरकार ने कर वसूली की पद्धति में बदलाव करने का वादा किया।

वल्लभ भाई पटेल

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ४४वीं बैठक जो ३१ दिसम्बर १९२९ में लाहौर में नेहरू की अध्यक्षता में हुई, उसमें भारत को स्वतंत्र घोषित कर आधीरात को तिरंगा फहराया गया। उन्होंने कहा देश को ब्रिटिश सरकार से मुक्ति चाहिए। यह भी निर्णय लिया गया कि २६ जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा।

विश्व में और कहाँ.......
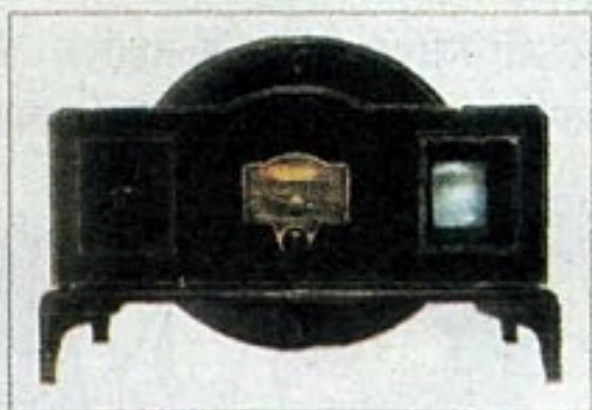
- २ अक्टूबर १९२५ को टेलीविजन का उदय हुआ, जब जॉन, लोगिन बेर्ड ने कुछ दूरी पर रखकर एक पर्दे पर चल चित्र दिखाने में सफलता प्राप्त कर की।

- मई २१, १९२७ को स्पिरिट ऑफ सेन्ट लूईस के एकलईंजन से चार्लस लिनुबेर्ग ने लगातार ३३ १/२ घंटे अकेले उड़ते रहने का ऐतिहासिक उच्चमान स्थापित किया। एक द्वीप से लेकर न्यूयार्क और पेरिस तक उन्होंने ३६०० मील की दूरी तय की।

नागरिक अवज्ञा का आरम्भ

कांग्रेस की कार्यकारी समिति ने फरवरी १९३० में साबरमती में हुई बैठक में निर्णय लिया कि गाँधीजी के नेतृत्व में नागरिक अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ किया जाएगा, जिनका मत

है कि नमक कानून पास हो। १२ मार्च को गाँधीजी और ७८ अन्य सहयोगियों ने २०० मील दूर डांडी के लिए पद यात्रा आरम्भ की। २४ दिनों बाद वे डांडी पहुँचे। जहाँ ६ अप्रैल को वे लोग समुद्र के किनारे जाकर नमक एकत्रित करने लगे और सरकार को बताया कि जिसपर वे कर लगाते हैं, वह समुद्र, हमें निःशुल्क देता है। एक महीने बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

नवम्बर १२ को लंदन में हुई प्रथम राउण्ड टेबल कान्फ्रेंस का कांग्रेस पार्टी ने बहिष्कार किया। जिन्ना जो उस समय मुस्लिम लीग का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, सभी विधानाभाओं में एक तिहाई स्थान मुसलमानों के लिए आरक्षित करने की मांग की। हिन्दू महासभा ने इस मांग पर विरोध प्रकट किया।

गाँधीजी और वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच हुए एक समझौते के चलते नागरिक अवज्ञा आन्दोलन को वापस ले लिया गया। सरकार ने सभी प्रकार के अत्याचार बंद करने का वादा किया।

१९३१ में लंदन में हुए द्वितीय राउण्ड टेबल कान्फ्रेंस में गाँधीजी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। सरकार ने घोषणा की कि भारत में स्वसरकार सामाजिक समितियाँ

तब तक प्रतीक्षा कर सकती हैं जब तक कि राजनीतिक समितियाँ लागू नहीं की जायेंगी।

नए वायसरॉय लार्ड विलिंगडन ने १९३२ में चार कानून जारी किए, जो वास्तव में किसी भी दुर्घटना से बचाते थे, चाहे वह प्रदर्शन हो या विरोध हो। परन्तु ये कानून गाँधी और इरविन के बीच हुए समझौतों के अनुसार नहीं थे। कांग्रेस ने एक बार फिर नागरिक अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने की घोषणा की। दल को गैरकानूनी दल करार दिया गया। देश के अन्य भागों से लगभग ५०० लोग गिरफ्तार किए गए।

- भारतीय भौतिक शास्त्री सी.वी.रामन को भौतिकी के लिए १९३० में नोबेल पुरस्कार दिया गया। जिसे 'रामन प्रभाव' कहा जाता है। वे पूरे एशिया में प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने यह महत्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त किया।

विश्व में और कहाँ.......

- सितम्बर १९२८ में न्यूयार्क में मिकी माऊस कार्टून फिल्म को पर्दे पर ध्वनि के साथ प्रस्तुत किया गया। इससे पूर्व दो मूक फिल्में प्रस्तुत की गई थीं, परन्तु वे वितरकों को आकर्षित नहीं कर पायीं।

- एलेक्जेन्डर फ्लीमिंग ने पेनिसिलीन का आविष्कार किया जो घाव को ठीक करने में कार्यकारी सिद्ध हुई।

एलेक्जेन्डर फ्लीमिंग

- १९२८ में ही 'एलिस एण्ड वन्डरलैण्ड' की वास्तविक पाण्डुलिपि १५,४०० डॉलर में बेची गई।

प्रांतों में प्रथम मंत्रिमंडल

गाँधीजी ने जेल में मई १९३३ में भूख हड़ताल की। यह २१ दिन चली। उन्होंने नागरिक अवज्ञा आन्दोलन को दूसरी बार स्थगित करने की घोषणा की कि अब उनकी सारी शक्ति छोटी जाति के लोगों के उत्थान के लिए होगी।

मई १९३४ में पटना में हुए कांग्रेस के सत्र में कुछ सदस्यों ने एक अलग से बैठक की और एक सामाजिक कांग्रेस दल की स्थापना की। सम्पूर्ण स्वतंत्रता के साथ-साथ उनकी माँगों में शामिल था- संसद की स्थापना और समाजवादी समाज की स्थापना। जयप्रकाश नारायण इस दल के अध्यक्ष चुने गए।

जयप्रकाश नारायण

उसी वर्ष जब अक्टूबर में कांग्रेस का ४८वां सत्र बम्बई में आरम्भ हुआ, गाँधीजी ने दल से अपना इस्तीफा दे दिया। नवम्बर में हुए केन्द्रीय विधानसभा परिषद के चुनाव में कांग्रेस बहुमत से विजयी हुई।

जवाहरलाल नेहरू १९३६ में हुए कांग्रेस के सत्र में अध्यक्ष बने और सलाह दी कि दल में सदस्यता लेने के लिए किसानों और मजदूर संघ को भी छूट होनी चाहिए। पहले से ही भारी पड़ रही दूसरे दल के सदस्यों की उपस्थिति सत्र में एक उदाहरण बनी रही। नए समाजवादी विचारक जैसे कि जयप्रकाश नारायण आदि को कार्यकारी समिति में शामिल किया गया।

एक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना की गई और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने को उत्साहित किया गया।

१९३७ में हुए चुनावों में कुछ प्रांतों में स्थापित मंत्रिमंडल के द्वारा कांग्रेस ने बहुमत प्राप्त किया। १५८५ स्थानों में ७१५ कांग्रेस को तथा १२३ मुस्लिम लीग को प्राप्त हुए।

संयुक्त राज्यों से जवाहरलाल की बहन विजयलक्ष्मी पण्डित विजयी हुई और प्रथम केन्द्रीय मंत्री बनी और स्वास्थ्य मंत्रालय का

विजयलक्ष्मी पण्डित

कार्य-भार सम्भाला।

उसी वर्ष अक्टूबर में हुई वर्धा बैठक में गाँधीजी ने अध्यक्षता ग्रहण की और एक नई शिक्षा योजना की घोषणा की। जिसे प्रारम्भिक शिक्षा कहा गया। जो पूरे तरीके से व्यवसायिक शिक्षा तथा भारतीय संस्कृति और परम्परा का अध्ययन था। पहला प्राथमिक विद्यालय वर्धा में ही स्थापित हुआ।

राष्ट्रीय आन्दोलन उन ५०० क्षेत्रों में अधिक जोर पकड़ने लगा जहाँ कांग्रेसियों ने अपने समूह की स्थापना की थी। कुछ राज्यों के शासक, जो इस प्रकार की क्रियाओं को नहीं जानते थे, अभी तक ब्रिटिश सरकार द्वारा बाधित थे। मैसूर और ट्रेवेंकोर जैसे राज्यों ने कांग्रेस के कार्यों का विरोध किया। कांग्रेस के हरीपुरा सत्र (१९३८) में राज्यों में कांग्रेस द्वारा सही जा रही परिस्थितियों पर चिन्ता व्यक्त की गई। जवाहरलाल नेहरू चाहते थे कि पार्टी राज्य की इकाईयों को पूरा सहयोग करे।

- ८ जनवरी १९३३ एक महत्वपूर्ण दिवस (स्मृति) के रूप में मनाया गया। जिसमें कांग्रेस द्वारा सभी हिन्दुओं को मंदिर में जाने की आज्ञा दी गई।

विश्व में और कहाँ.......

- जर्मनी वालों ने एक जेपलिन नामक एअर शिप बनाया जो पूरे विश्व का २१ दिनों में चक्कर लगाकर वापस आया। (१९२९)
- यू.एस. के खगोल शास्त्री क्लेडी टाम्बाग ने नवें ग्रह प्लूटो (यम) की उपस्थिति को खोज निकाला। (१९३०)
- डॉन ब्रैडमैन ने एक पार्टी में बिना आऊट हुए ४५२ रन बनाकर विश्व प्रतिमान बनाया। उन्होंने न्यू साऊथ वेल्स के लिए खेला और क्यून्सलैण्ड के विरोध में ४१५ मिनट में ४९ चौके लगाए। (१९३०)

- 'हैप्पी बर्थ डे टू यू' गीत क्लैटन एफ. सैमी द्वारा १९२४ में लिखा और संगीतबद्ध किया गया।
- गेर्टरूडे एडेरले प्रथम महिला बनी जिन्होंने इंग्लिश चैनल तक तैराकी की। (१९२६)

कांग्रेस में अध्यक्ष के लिए मनमुटाव

कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद के लिए पहली बार मनमुटाव पैदा हो गया। गाँधीजी ने पट्टाभि-सीतारामैय्या का नाम प्रस्तावित किया। सुभाष चन्द्र बोस ने अपना नाम घोषित किया जो कि लेफ्ट विंग के सहयोग से था। और वे सम्पूर्ण बहुमत के साथ विजयी हुए। गाँधीजी ने इसे व्यक्तिगत हार के रूप में लिया। मार्च १९३९ में ५२वाँ सत्र त्रिपुरा में हुआ। जिसमें एक प्रस्ताव पारित हुआ। जिसमें गाँधीजी के आत्म विश्वास को बढ़ाने के लिए उन्हें कार्यकारी समिति के सदस्यों की नियुक्त करने का अधिकार दिया गया। बोस के सहयोगियों ने इसे अध्यक्ष के प्रति विश्वास में कमी माना। जब उन्हें लगा कि वे स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर पायेंगे तो उन्होंने इस पद से त्याग पत्र दे दिया और 'फार्वर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। इसलिए उन्हें कांग्रेस से निकाल दिया गया।

सुभाष चन्द्र बोस

द्वितीय विश्व युद्ध के आरम्भ होते ही, सितम्बर में वॉयसराय ने सभी प्रांतीय सरकारों का स्थगन कर दिया। यह घोषणा की गई कि भारत युद्ध में ब्रिटेन का सहयोग करे। परन्तु कांग्रेस कार्यकारी समिति ने कहा कि यह तभी होगा जब सरकार यह बताए कि युद्ध लोगों को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है! भारत को तत्काल स्वतंत्र घोषित कर देना चाहिए और अल्पसंख्यकों के अधिकार की रक्षा हो।

युद्ध के दौरान एक साल के भीतर ही कांग्रेस लगातार अपनी माँग पर बनी रही और एक अंतरिम सरकार की स्थापना पर बल दिया। यदि यह नहीं होता है तो अंततः नागरिक अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ होगा। इस प्रकार गाँधीजी और जवाहरलाल नेहरू ने एक साथ मिलकर घोषित किया कि जब युद्ध में ब्रिटेन शामिल हो तो लोगों को नागरिक अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।

वॉयसरॉय लार्ड लिंगलिथगो ने कांग्रेस को विश्वास दिलाया कि युद्ध समाप्ति के बाद प्रतिनिधित्व संसद की स्थापना होगी। जो भारत के संविधान का निर्णय लेगी। सितम्बर में जब कांग्रेस समिति की बैठक बम्बई में हुई तो गाँधीजी की इस सलाह को मान लिया गया कि सामुहिक प्रदर्शन करने के स्थान पर व्यक्तिगत रूप से विरोध प्रकट

विनोबा भावे

किया जाए। और लोग नागरिक अवज्ञा करें जिसमें वे सत्याग्रह के लिए व्यक्ति को चुनेंगे। गाँधीजी ने विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही के रूप में चुना। उन्होंने वर्धा के निकट पनवार से पद यात्रा प्रारम्भ की। यात्रा के चौथे दिन उन्हें हिरासत में ले लिया गया। जवाहरलाल नेहरू को सत्याग्रह आरम्भ करने से पूर्व ही गिरफ्तार कर लिया गया। शीघ्र ही सभी प्रमुख नेताओं जैसे वल्लभभाई पटेल, सी. राजगोपालाचारी और मौलाना अबुल कलाम आजाद को भी जेल में डाल दिया गया।

- सरकार का स्थान नए शहर दिल्ली में स्थानांतरित कर दिया गया। यह १९३१ था।

- भारत का पहला चित्र डाक टिकट दिल्ली पर जारी किया गया जो नए शहर के उद्घाटन का चिन्ह था।

विश्व में और कहाँ.......

- १९३४ में कॉमिक्स की एक पुस्तक प्रकाशित हुई जबकि कार्टून और कॉमिक्स बिना संदेह समाचार पत्रों में छप रहे थे। यह ६८ पन्नों की पुस्तक 'दि फेमस फनीज़' के नाम से छापी गई।

- १९३७ में विश्व का सबसे लम्बा (४२०० फीट) का गोल्डेन गेट ब्रिज सेनफ्रांसिसको में यातायात के लिए खोला गया।

- बर्मा भारत से १९३७ में ही अलग हुआ (जो अब म्यानमर कहा जाता है)

- १९३७ में यू.एस.ए. में बेर्नार्ड फाउस्टेस ने प्रथम 'ब्लड बैंक' की स्थापना की।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सहयोग

सुभाषचन्द्र बोस जिन्हें कलकत्ता में नजरबंद करके रखा गया था, वे १७ जनवरी १९४१ को वहाँ से छिपकर निकल गए। वहाँ से निकलने के बाद वे पेशावर, काबुल, मास्को से होते हुए बर्लिन पहुँचे जहाँ उन्होंने भारत सेना के नाम से पुकारे जाने वाले सैन्य दल की सहायता के साथ स्वतंत्र भारत केन्द्र की स्थापना की। उन्होंने आजाद हिन्द रेडियो से संदेश प्रसारित करना आरम्भ किया।

भारत की स्वतंत्रता के बारे में यह बात फैल गई कि भारत अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही न्याय चाहता है और अपनी स्वतंत्रता की मांग कर रहा है। १९४२ में गणतंत्र चीन के अध्यक्ष चियांग काई-शेक ने ब्रिटेन से अपील की कि वह भारतीय लोगों को भी अधिकार प्रदान करे। ब्रिटिश राष्ट्रपति विन्सटन चर्चिल से अपनी बातचीत में यू.एस. के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कहा कि एक अंतरिम सरकार की स्थापना की जानी चाहिए। ब्रिटिश संसद में ही लगभग सभी लोग एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की मांग कर रहे थे।

बम्बई में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में ही कार्यकारी समिति ने यह प्रस्ताव पारित कर दिया कि ब्रिटेन तत्काल भारत छोड़े। साथ-साथ ही उन्होंने गाँधीजी के नेतृत्व में सामूहिक विरोध करना आरम्भ किया।

९ अगस्त को उन्होंने ब्रिटिश सरकार को 'भारत छोड़ो' आंदोलन का संदेशा भेजा। जो देश में एक प्रसिद्ध मुहावरा बन गया और सभी लोगों के मुँह से सुना जाने लगा। लगभग सभी नेताओं को एक ही रात में गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय पूरे तरीके से हिंसा फैल गई।

जेल से ही लगातार गाँधीजी वॉयसरॉय को संदेशा भेजते रहे। वहाँ से कोई सकारात्मक उत्तर न मिलने के कारण फरवरी १९४३ में गाँधीजी ने २१ दिन के अनशन की घोषणा कर दी। कुछ जाने माने व्यक्ति जो किसी भी राजनीतिक दल से संबंध नहीं रखते थे, उन्होंने सरकार से गाँधीजी तथा अन्य नेताओं को छोड़ने की अपील की। वॉयसरॉय कार्यकारी समिति के कुछ भारतीय सदस्यों ने त्यागपत्र दे दिया।

पानी की और हवाई जहाजों से जोखिम भरी यात्रा करते हुए सुभाषचन्द्र बोस जापान पहुँचे, जहाँ प्रधान मंत्री टोजो ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग देने का वादा किया। उसी समय

'नेताजी' बोस

रासबिहारी भारतीय स्वतंत्रता लीग की ओर अग्रसर होकर थाईलैण्ड की राजधानी बैंकॉक से सिंगापुर आए। जहाँ सुभाषचन्द्र बोस ने अपनी आजाद हिन्द फौज के साथ २ जुलाई को उन्हें सुरक्षा सम्मान दिया। सुभाषचन्द्र बोस को 'नेताजी' कहा जाने लगा और उन्होंने 'चलो दिल्ली' का नारा दिया। २१ अक्टूबर को उन्होंने सिंगापुर में आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की घोषणा कर दी।

- १९३५ में दिल्ली राष्ट्रीय मार्ग पर एक राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया। हैली राष्ट्रीय उद्यान का नाम बदलकर कॉरबेट राष्ट्रीय उद्यान रखा गया। (१९५७)

के.एम. मुन्शी

- १९३६ में कुलपति के.एम. मुन्शी ने भारतीय विद्या-भवन की स्थापना की।

विश्व में और कहाँ.......

- थाईलैण्ड, मलाया तथा जापान में रह रहे भारतीयों ने भारत स्वतंत्रता लीग की स्थापना की और सुभाषचन्द्र बोस से इसका नेतृत्व करने की अपील की। (१९४२)

- द्वितीय विश्व युद्ध के दो मुख्य दुष्कर्मियों का बड़ा ही भयानक अंत हुआ। अडोल्फ हिटलर जो जर्मनी का नाजी शासक था, उसने आत्महत्या कर ली और इटली का जेनेरलीसिमो, मुसोलिनी की हत्या कर दी गयी। ७ मई १९४५ में जर्मनी ने हथियार डाल दिया। जापान अभी भी आगे बढ़ रहा था। परन्तु ६ और ९ अगस्त को हिरोशिमा पर नागासाकी पर बम गिरने के बाद, देश में काफी जाल-माल की हानि हुई और इसी ने जापान को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। जापान ने भी १४ अगस्त को समर्पण कर दिया।

अधिकार प्रदान करने की योजना

ब्रिटिश सरकार हमेशा इस बात पर बहस कर रही थी कि मुस्लिम लीग के नेता राष्ट्रीय सरकार के खिलाफ हैं। सी. राजगोपालाचारी कुछ मुस्लिम नेताओं से मिले और उन पर ज़ोर

सी. राजगोपालाचारी

डाला जो सी.आर. फार्मुला कहा जाने लगा। उन्होंने कहा मुस्लिम लीग को राष्ट्रीय सरकार बनाने में सहयोग देना चाहिए और युद्ध के बाद वह मुस्लिम बहुसंख्यक क्षेत्र में अपनी अलग से सरकार बना लेगी। लीग के अध्यक्ष जिन्ना ने इस फार्मुले को नहीं माना। वे पाकिस्तान की स्थापना पहले और बाद में स्वतंत्रता चाहते थे। सितम्बर १९४४ में गाँधीजी जिन्ना से मिले लेकिन उनकी बातचीत से क़ोई हल नहीं निकला कांग्रेसियों की ओर से भुलाभाई देसाई ने एक अंतरिम सरकार बनाने की सलाह दी जो समान रूप से मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस द्वारा संचालित होगी।

आजाद हिन्द सरकार का स्थान सिंगापुर से बर्मा की राजधानी रंगून में स्थानांतरित हो गया। शीघ्र ही भारतीय राष्ट्रीय सेना भारत की सीमा पर पहुँच गयी और मोइरेन मनीपुर में तिरंगा फहरा दिया। ६ जून १९४४ में नेताजी ने रंगून रेडियो पर भाषण दिया और उसमें गाँधीजी को 'राष्ट्र पिता' कहा।

नए वॉयसरॉय लॉर्ड वावेल ने ईंगलैण्ड में संपर्क करने के बाद १९४५ में एक घोषणा की जिसमें उन्होंने सरकारी शक्ति के स्थानांतरण की योजना बताई। यह योजना पूरे तरीके से अंतरिम सरकार की व्याख्या कर रही थी, जो भविष्य में कभी भी संविधान बनाने में बाधा नहीं डालेगी। कार्यकारी परिषद में मुस्लिम लीग और कांग्रेस दोनों समान रूप से प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिसमें वॉयसरॉय और कमाण्डर-इन-चीफ ही अंग्रेज थे। शिमला में सर्वदलीय बैठक हुई जिसमें जिन्ना ने कहा कि पाकिस्तान की स्थापना के पूर्व मुस्लिम लीग कोई भी प्रस्ताव स्वीकार नहीं करेगी। उस बैठक का एक ही परिणाम निकला कि भारत छोड़ो

आन्दोलन के समय जो लोग गिरफ्तार हुए थे उन्हें मुक्त कर दिया गया।

प्रांतीय सरकारों की एक बैठक ने सामान्य चुनाव कराने की मांग की। वॉयसरॉय इसके लिए तैयार हो गया। कांग्रेस ने इन चुनावों में भाग लेने का निर्णय लिया परन्तु अन्य सभी सलाहों को अस्वीकार कर दिया।

सरदार उधम सिंह

- जलियांनवाला बाग के सामुहिक हत्याकांड का बदला तब चुकता हो गया जब एक सिख युवक सरदार उधम सिंह ने १९४० में लंदन में पूर्व पंजाब गवर्नर माईकल ओ. डायर की गोली मारकर हत्या कर दी। डायर ने ही जलियांनवाला बाग में गोली चलाने का आदेश दिया था। २१ वर्ष पहले हुए इस नर संहार में उधम सिंह भी घायल हुए थे।

विश्व में और कहाँ.......

- १० जनवरी १९४६ में संयुक्त राष्ट्र की पहली बैठक लंदन में हुई। ५१ देशों के प्रतिनिधि वहाँ उपस्थित थे। संयुक्त राष्ट्र का केन्द्र स्थाई रूप से न्यूयार्क में बनाने का निर्णय लिया गया।

- यू.एस.ए. में एक कम्पनी ने विद्युत कम्बल बनाया। (१९४६)

- प्रथम विलक्षण उड़ान ने १,२०० कि.मी. प्रति घंटा रफ्तार रिकार्ड की। (१९४७)

- संयुक्त राष्ट्र ने अंतर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना की जो प्रकृति के बिपरीत हो रहे कार्यों पर और पर्यावरण भूतत्व की समस्याओं पर ध्यान दे।

- पहला 'ड्राइव इन थियेटर' न्यूजर्सी में खोला गया। (१९३३)
- मास्को मोट्रो (पहली अन्डर ग्राउण्ड रेलवे) सेवा के लिए आरम्भ हो गई। (१९३५)
- पहला यात्री हेलीकाप्टर जर्मनी में बनाया गया। (१९३६)

अंतत: स्वतंत्रता

उसी समय दिल्ली जा रही भारतीय राष्ट्रीय सेना ब्रिटिश सेना द्वारा रोक दी गई। जब नेताजी को पता चला कि ब्रिटिश सेना बर्मा तक चढ़ आई है तो वे रंगून छोड़कर बैंकाक चले गए, जहाँ उन्हें जर्मनी के हथियार डालने की सूचना मिली। तब वे मलाया गए, वहाँ उन्हें जापान के आत्मसमर्पण का पता चला। उसके बाद वे लौटकर सिंगापुर गए। वहाँ मंत्रियों ने उन्हें छिप जाने की सलाह दी। और कहा कि आजादी के बाद आकर वे सेना का प्रतिनिधित्व करें। एशिया जाते हुए रास्ते में ही मनचुरिया पड़ा जहाँ जापान ने उन्हें सहयोग देने का वचन दिया था। २२ अगस्त १९४५ में ताइपेई में उनका जहाज ध्वस्त हो गया। ऐसी सूचना मिली की उनका जीवनांत हो गया। लेकिन यह समाचार आज भी रहस्य बना हुआ है।

१९४६ में हुए केन्द्रीय विधान सभा के चुनावों में कांग्रेस को ५६ और मुस्लिम लीग को ३० सीटें मिलीं। प्रदेश परिषदों में कांग्रेस को ९२३ और जबकि लीग को ४२५ सीटें मिलीं। बंगाल में लीग ने एक मंत्रीमंडल की स्थापना की, पंजाब में एक मिली-जुली सरकार बनी जबकि दूसरे राज्यों में कांग्रेस के मंत्री रहे। सिंध में लीग का बहुमत था, परन्तु जो चुनाव जीत गए, उन्होंने कांग्रेस के साथ गठबंधन कर लिया।

एक तीन सदस्यीय मंत्रीमंडल आयोग ईंगलैण्ड से भारतीय नेताओं से बातचीत करने के लिए भारत आया। उन लोगों ने सलाह दी कि भारत संघ की स्थापना की जाय। न कि मुसलमानों के लिए पृथक राज्य। उन्होंने कहा, तीन प्रांतीय समूहों की स्थापना की जाए और उसके सदस्य मिलकर संविधान की रूप-रेखा तैयार करें। और रूपरेखा ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वीकार करने योग्य हो।

जून में एक अन्तरिम सरकार की स्थापना की घोषणा हुई। जिन्ना हिन्दू और मुस्लिम एकता के लिए तैयार नहीं हुआ। नेहरू से कहा गया कि वे एक मंत्रिमंडल की स्थापना करें। मंत्रीमंडल ने २ सितम्बर को कार्यालय की शपथ ली। मुसलमानों ने इस दिन को शोक दिवस के रूप में मनाया। इस प्रकार १३ अक्टूबर को लीग ने मंत्रीमंडल में शामिल होने की घोषणा की और कहा कि पाकिस्तान बनाने के लिए यह पहला कदम है।

जवहरलाल नेहरू

मुसलमानों का एक दल इससे खुश नहीं था। परिणाम स्वरूप कलकत्ता और बंगाल के कुछ

भागों में सांप्रदायिक झगड़े हो गए। हिन्दुओं से बदला लिया गया। मुसलमानों द्वारा पहले से ही प्रभावित नोखाली में हिन्दुओं की हत्या की गई। गाँधीजी उस स्थान पर शांति का संदेशा लेकर गए। वे गाँव-गाँव लगभग १२० कि.मी. चले और हिन्दु-मुस्लिम एकता की अपील की।

राजेन्द्रप्रसाद

११ दिसम्बर १९४६ को बाबू राजेन्द्रप्रसाद संगठित संसद के अध्यक्ष बने।

२ जून १९४७ को वॉयसरॉय लार्ड माउण्ट बेटेन भारत के तीन मुख्य दलों के नेताओं से मिले और अधिकार प्रदान करने की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया। अगले दिन वॉयसरॉय ने ३ जून को पाकिस्तान और भारत संघ के विभाजन की घोषणा की और कहा कि वे ब्रिटिश जनतंत्र के नीचे ही कार्य करेंगे। सरकार ने राज्य शोषित प्रदेशों को भी स्वतंत्र कर दिया कि वे दो राष्ट्रों में से किसी में भी मिल सकते हैं। १६ जुलाई को ब्रिटिश संसद ने भारतीय स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित किया। वहीं पर यह निर्णय लिया गया कि १५ अगस्त को अधिकार भी दिए जाएँगे।

भारत की कुछ ''प्रथम'' घटनाएँ

- भारत का पहला बालगृह मद्रास में भारतीय महिला संघ द्वारा स्थापित किया गया। (१९२३)
- भारत की पहली साईकिल फैक्टरी कलकत्ता में लगाई गई। (१९३८)
- भारत का पहला 'ब्लड बैंक' यू.एन. ब्रम्हचारी द्वारा १९३८ में आरम्भ किया गया। (विश्व में दूसरा)
- *चन्दमामा*, जो शीघ्र ही एक प्रसिद्ध बाल पत्रिका बनी और १२ भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने लगी, उसका आरम्भ भी १९४७ में तेलुगु भाषा में हुआ।
- पहला डाक टिकट जो तिरंगे के चित्र के साथ छपा, वह भारतीय स्वतंत्रता का चिन्ह था। यह साढ़े तीन आना में मिलता था। (लगभग २० पैसे) वह भी १९४७ में आरम्भ हुआ।
- सी. राजगोपालाचारी प्रथम और मात्र एक ही भारतीय गवर्नर जनरल बने। (१९४८)
- भारत को जनरल के.एम. करियप्पा के रूप में प्रथम कमान्डर-इन-चीफ मिला। (१९४९)

एक सर्वोच्च गणतंत्र का आरम्भ

१४ अगस्त को जिन्ना पाकिस्तान के गवर्नर जनरल बने और लियाकत अली खान प्रधानमंत्री।

आधीरात के समय जवाहरलाल नेहरू ने एक ऐतिहासिक 'ट्रस्ट विथ डेस्टिनी' जैसा भाषण दिया। लार्ड माउण्ट बेटन को गवर्नर जनरल बनाया गया और नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

जवहरलाल नेहरू

४ सितम्बर को दिल्ली में साम्प्रदायिक दंगे हो गए और गाँधीजी नोखाली से दिल्ली पहुँचे। इन दंगों ने पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में कत्लेआम होने का भय पैदा कर दिया।

दिल्ली में तो शांति बनाई जा सकी, परन्तु एक बार फिर दंगे हो गए। गाँधीजी १८ जनवरी को अनशन पर बैठ गए। जो पाँच दिनों तक चलता रहा। हिन्दू-मुस्लिम नेताओं से बिश्वास लेने के बाद ही उन्होंने अनशन तोड़ा। ३० जनवरी को नाथूराम गोट्से ने गाँधीजी की ईहलीला समाप्त कर दी।

गाँधीजी

६ नवम्बर १९४९ को गठित समिति ने संविधान का कार्य पूरा किया और संसद ने उनके द्वारा बनाए गए संविधान के ढाँचे को स्वीकार भी कर लिया। २६ जनवरी १९५० को पूर्ण संविधान लागू हुआ और भारत पूर्ण गणतंत्र के रूप में विश्व के समक्ष आया। जिसमें न्याय, स्वतंत्रता, समानता और धर्म की स्वतंत्रता थी।

राजवाड़ा राज्य कश्मीर में दंगे हो गए, जहाँ मुस्लिम जनता का प्रभाव था और शासनकर्ता एक हिन्दू था। कश्मीर के लोगों में भारत संघ में प्रवेश करने के लिए संदेह था, लेकिन शासक ने आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया और संघ में शामिल हो गए। पाकिस्तान के लालची पठानों ने कश्मीर पर अचानक हमला किया और यही भारत और पाकिस्तान की पहली लड़ाई का कारण बना। १ जनवरी १९४८ को भारत और पाकिस्तान, कश्मीर में युद्ध समाप्त करने पर राजी हो गए और इसके भविष्य के बारे में निर्णय लेने का भार जनमत पर छोड़ दिया।

(आगामी अंक में : भारत प्रगति पथ की ओर अग्रसर १९५१-२०००)

कवि का दूत

कांचनवर्मा, कांचनपुर का राजा था। किसी भी हालत में वह जनता को कष्ट पहुँचाता नहीं था। लोग भी उन्हें बहुत चाहते थे। पर्याप्त मनन करने के बाद नये-नये सुधार वे अमल में ले आये। फलस्वरूप जनता सुखी थी और उन्हें किसी बात की कमी नहीं थी। धन-धान्य से राज्य सम्पन्न था।

एक दिन जब वे अपने दरबार में आये, तब निरंजन साहुकार नामक एक व्यापारी वहाँ आया। वह सुगंधि द्रव्यों का व्यापारी था। बिना किसी उतार-चढ़ाव के देश-विदेशों में वह अपना व्यापार सुचारू रूप से चला रहा था। उसने महाराज से निवेदन किया, "प्रधानतया मैं सुगंध द्रव्यों को विदेशों से ले आया हूँ। जावा द्वीप से एक नया-नया इत्र मंगवाया, पहले-पहल महाराज को उसे समर्पित करना मेरा कर्तव्य है। आप कृपया इसे स्वीकार कीजिये।" फिर उसने महाराज काचनवर्मा को इत्र की एक शीशी समर्पित की।

राजा उसकी सुगंधि पर बहुत ही मुग्ध हुआ और कर्मचारियों को आज्ञा दी कि वह इत्र सबके वस्त्रों पर डाला जाए। कर्मचारियों ने राजा की आज्ञा का पालन किया। पूरा दरबार सुगंधित हो गया।

तब आस्थान के मुख्य कवि चंद्रचूड़ उठे और बोले, "निरंजन साहुकार का लाया इत्र, इत्र नहीं बल्कि ज्वाला द्वीप में फैले हमारे राजा की कीर्ति का परिमल है।"

राजा की प्रशंसा में कहे गये इन वाक्यों को सुनकर सभी सभासदों ने तालियाँ बजायीं। हर्षविभोर हो निरंजन ने कहा, " महाराज, कविवर के कहे अनुसार आपकी कीर्ति का परिमल ही मेरे व्यापार का मूल स्तंभ है। कविवर की बातों में सचाई ही सचाई है।"

दरबार में घटी इस घटना का विवरण अंतःपुर तक पहुँच गया। महारानी से लेकर परिचारिका तक सबने मुक्त कंठ से उस सुगंधि की वाह वाही की। कांचनवर्मा परिमल के नाम से कांचनपुर में यह इत्र प्रचुर मात्रा में बेचा भी जाने लगा।

मार्कंडेय शर्मा

साहुकार ने आस्थान कवि को एक दिन अपने घर बुलाया और कहा, "मुझे खुद मालूम नहीं कि यह इत्र कितना प्रभावशाली व उत्तम है, परंतु आपकी प्रशंसा से इसे बड़ी ख्याति मिली है। कांचनवर्मा परिमल के नाम से यह प्रख्यात हो गया और इसकी बहुत ब्रिक्री हो रही है। इससे मैं बहुत कमा भी रहा हूँ। इस लाभ में आपको भी हिस्सा मिलना चाहिये।" फिर उसने कवि को रेशमी वस्त्र और योग्य दक्षिणा दी। फिर उससे कहा मेरी और मेरे व्यापार की प्रशंसा करते हुए कवितायें रचते रहिये। हर नागरिक के मन में मेरा नाम अंकित हो जाए, उनके मुहँ से मेरी प्रशंसा होती रहे, वे मेरे ही व्यापार की बातें करते रहें। अगर ऐसा हुआ तो आपको मुँहमाँगा इनाम देता रहूँगा।"

उसकी बातों से नाराज होकर कवि चंद्रचूडड़ ने उसके रेशमी वस्त्र और दक्षिणा को लेने से इनकार करते हुए कहा, "साहुकार, कोयल आम के किसलयों को खाते हुए केवल बसंत काल में कूंकती है। आकाश में जब बिजली कौंधती है, तभी मोर पंख फैलाकर नाचता है, उसी तरह अच्छा काव्य रचने के लिए प्रोत्साहन देनेवाले की प्रशंसा में ही कवि गाता है। तुम जैसे स्वार्थी व लोभी की प्रशंसा में कदापि वह नहीं गाता। ऐसी कविता तो कविता कहलाने के योग्य भी नहीं है।"

तुम्हारे व्यापार की वृद्धि के लिए रची जानेवाली कविता, कविता की सूची में ही नही आती। अगर कहीं गलती हो गयी, प्रजा का अहित हो तो राजा की भी निंदा करने से मैं पीछे नहीं हटता। अपने कविता से जनता में चेतना भरूँगा और उन्हें जागृत करूँगा। अपने व्यापार की वृद्धि के लिए मुझे उपयोग में लाने का व्यर्थ प्रयत्न मत करो!"

कवि की इन बातों से साहुकार के चेहरे का रंग उड़ गया। वह थोड़ी देर के लिए सन्न् रह गया। यह बात महाराज कांचनवर्मा के कान में पड़ी। उन्होनें कवि को बुलाकर कहा, " सुना कि मुझमें गलती होने पर मेरी निंदा भी करने के लिए तैयार हो। इसी

क्षण तुझे कारागार में डाल सकता हूँ। क्या तुम मेरा कुछ बिगाड़ सकोगे ?"

चंद्रचूड़ जवाब देने ही वाला था कि मंत्री ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "महाराज शनज दुष्ट था, दुर्योधन अहंकारी था। उन दोनों के दुर्गुणों को कवि ने स्पष्ट शब्दों में कहा, इसीलिए राम भगवान हो पाये। महाभारत के रचयिता ने धर्मराज का गुणगान गाया, इसीलिए धर्मराज के बड़प्पन के बारे में जनता जान सकी। उसी प्रकार कीचक जैसे स्त्री लोलूप के बारे में भी बताया गया और उसे दंड दिया गया। इसके बारे में भी कवि ने बताया। हमारे आस्थान कवि का भी यही उदेश्य रहा। अच्छे लोगों के बारे में ही नहीं, बल्कि बुरे लोगों के बारे में बताने की शक्ति रखते हैं, हमारे कविराज। ऐसा कहने के पीछे उनका कोई दुरूदेश्य नहीं। उन्होंने केवल अपने कर्तव्य की ओर ईंगित मात्र किया।"

कवि ने मंत्री की बातों का समर्थन किया। तब जाकर राजा शांत हुएं।

इस घटना के घटने के कुछ वर्षों बाद लगातार चार सालों तक देश में अकाल पड़ा। साहुकार को व्यापार में हानि उठानी पड़ी तो वह किसी और देश में चले जाने की तैयारियाँ करने लगा।उस परिस्थिति में पड़ोसी राज्य, कलयाण देश का राजा शक्तिसिंह कांचनपुर पर आक्रमण करने की तैयारियों में लगा हुआ था। इसका कोई और चारा न होने के कारण राजा कांचनवर्मा ने शत्रु राजा से संधि करनी चाही। मंत्री की सलाह पर राजा ने चंद्रचूड़ को राजदूत के रूप में कल्याण देश भेजा।

कल्याण के राजा शक्तिसिंह ने राजदूत चंद्रचूड़ का आदर किया और कहा, "शास्त्र कहते हैं कि राजदूत को दंड देना अनुचित है।आपके देश को हमारे देश में मिला लेने का निश्चय हम कर चुके।

तुम स्वंय एक कवि हो, पर अब राजदूत बनकर हमारे यहाँ आये हो। हम जानना चाहते हैं कि इसके बारे में तुम्हारे अभिप्रयाय क्या हैं ? तुम हमें गालियाँ दो, हमारी भर्त्सना करो, फिर भी तुम्हारे देश को अपने देश के अधीन करके ही रहेंगे।"

चंद्रचूड ने हसँकर जवाब देते हुए कहा, "मैंने अब तक अपने देश के राजा का संदेश ही नही सुनाया और आपने अपने मन की बात कह दी। यह वास्तविक है कि अभी हमारा देश दुर्स्थिति में है। रक्तपात के बिना आपके अधीन हो जाने की इच्छा रखते हैं। आपकी बातें मैंने ध्यान से सुन लीं। अब कांचनपुर के एक नागरिक होने के नाते मेरी भी बातें सुन लीजिये। घर के दरवाजे खुले हों और कोई कुत्ता उसमें घुस जाए तो भला हम कर भी क्या सकते हैं? मानता हूँ कि अब हमने अपना सर झुका लिया, किन्तु किसी दिन आपको अपने देश से भगाने की शक्ति रखते हैं। हम देश भक्त हैं और महाराज ने देशभक्ति की भावना को हममे उस

मात्रा में भरा है।''

शक्तिसिंह उसकी बातों को सुनकर आपे से बाहर हो गया, पर उसे मुक्त कर दिया, क्योंकि वह वहाँ राजदूत बनकर आया था। वापस आने के बाद चंद्रचूड़ ने राजा को पूरा विवरण दिया। शक्तिसिंह की धमकियों से नाराज़ होकर कल्याण वर्मा ने युद्ध करने का निश्चय किया। ''विजय होगी या वीरगति की प्राप्ति।''

कवि चंद्रचूड़ ने, शक्तिसिंह के सम्मुख देशभक्तिपूर्ण जो बाते कही थीं, उन बातों ने जनता पर जादू कर दिया। उनके हृदयों में भी देशभक्ति की आग सुलग उठी।उन्होने प्रतिज्ञा की कि हार हो या जीत, हर हालत में वे राजा का साथ देंगे। युद्ध भूमि में वे शत्रुओं की जानें लेंगे या अपने देश के लिए जान देंगे। निरंजन साहुकार ने भी विदेशों से दैनिक आवश्यकताओं के लिए आवश्यक वस्तुएँ मंगायी और उन्हे सस्ते दाम में जनता को बेचने लगा।

कांचनपुर की प्रजा की प्रतिज्ञा तथा उनमें उत्पन्न जागृति को लेकर शक्तिसिंह के राज्य की जनता आपस में कानाफूसी करने लगी। ''अगर हमारे राजा ने अब कांचनपुर पर चढ़ाई कर दी तो उनकी हार निश्चित है। अच्छा इसी में है कि हमारा राजा इस स्थिति में उस राज्य पर आक्रमण न करें।''

शक्तिसिंह को भी गुप्तचारों के द्वारा अपने देश की जनता के मनोभाव मालूम हुए। उसने महसूस किया कि मैं ग़लती करने जा रहा हूँ और इसे सुधारना चाहिये। उसने एक राजदूत द्वारा राजा कल्याण वर्मा को संदेश भेजा कि, ''मैं आपके देश पर आक्रमण करने नहीं जा रहा हूँ। आपके साथ मैं दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहता हूँ। अब आपका देश अकाल से पीड़ित है। आपकी जनता के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ भेजने की व्यवस्था कर रहा हूँ। जो हो गया, उसे कृपया भूल जाइये।''

अपने वचन के अनुसार शक्तिसिंह ने राजा कल्याण वर्मा को आवश्यक खाद्य पदार्थ भेजे। उसने यों जीवन प्रयत्न मित्रता निभायी। चंद्रचूड़ के दौत्य की भरपूर प्रशंसा हुई।

आस्थान कवि चंद्रचूड़ ने कुछ समय बाद अपने देश के राजा के साहस व उदारता की प्रशंसा करते हुए एक काव्य की रचना की, जिसमें उसने निरंजन साहुकार की उदारता का भी जिक्र किया।

महाभारत

युधिष्ठिर ने सर्वप्रथम अपने लिए राज्य प्राप्ति के प्रमुख कर्ता कृष्ण के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और उनकी स्तुति की। इसके उपरांत अपने भाइयों को संबोधित कर कहा-"हे भाइयों, मेरे कारण तुम लोगों को जंगल में असंख्य कष्टों का सामना करना पड़ा है।

साधारण लोग तो वे कष्ट उठा नहीं सकते। अब हमने विजय प्राप्त की है। तुम लोग थोड़े दिन तक विश्राम करो, फिर हम मिलेंगे।"

युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र की अनुमति से दुर्योधन के महल को दास-दासियों के साथ भीम के लिए निवास-भवन के रूप में दे दिया। इसी प्रकार दुश्शासन का महल अर्जुन को, दुर्मर्षण तथा दुर्मुख के ऊँचे भवनों को नकुल और सहदेव को दिया। सबने अपने अपने नये भवनों में प्रवेश किया। कृष्ण और सात्यकी अर्जुन के महल में ठहर गये।

कुछ दिन पश्चात युधिष्ठिर कृष्ण को देखने गये और बोले-"हमें राज्य और प्रतिष्ठा तो प्राप्त हो गयी है। लेकिन मुझे और भी संदेह सता रहा कि हमने धर्म के विरुद्ध कोई कार्य किया है, इसलिए मेरा मन रात-दिन अशांत बना रहता है । कृपया आप हमारे इस संदेह की निवृत्ति कीजिए।"

कृष्ण ने थोड़ी देर तक गंभीरता पूर्वक

विचार करके कहा - " मैं भीष्म के बारे में विचार कर रहा हूँ । वे सभी धर्मों के ज्ञाता हैं । बाँणशैय्या पर शयन करनेवाले उस भीष्म की मृत्यु से अपार ज्ञान का क्षय हो जाएगा । इसलिए आप शीघ्र उनके पास जाइए । मैं चाहता हूँ कि इस प्रकार विश्व का यह ज्ञान सदा के लिए बना रहे ।"

"इस पर युधिष्ठिर ने कहा - उनके" संबंध में आपका जो विचार है, मेरे भी मन में वही विचार है । आप ही हमें उस महानुभाव के पास ले जाइए। शायद वे आपको भी देखने की इच्छा रखते होंगे ।"

कृष्ण ने उसी समय सात्यकी से कहा- "हम लोग इसी वक्त भीष्म को देखने जा रहे हैं। रथ तैयार करवा दो !" इसके बाद कृष्ण और सात्यकी एक रथ पर, युधिष्ठिर और अर्जुन दूसरे रथ पर, तथा भीम, नकुल और सहदेव एक और रथ पर सवार हो भीष्म के निकट गये। कृपाचार्य, युयुत्स तथा संजय अलग-अलग रथों पर वहाँ पहुँचे।

रास्ते में उन्हें पांच कुण्ड दिखाई दिये। कृष्ण ने युधिष्ठिर को बताया कि वे कुण्ड परशुराम के हैं। इकीस बार परशुराम ने क्षत्रियों को ढूँढ-ढूँढ कर बध किया, तब ये कुण्ड क्षत्रियों के रक्त से भर गये, तब जाकर परशुराम ने उस रक्त से अपने पिता का तर्पण किया था। इस प्रकार उनके क्रोध की अग्नि शांत हो गई थी ।

युधिष्ठिर के पूछने पर कृष्ण ने परशुराम का वृत्तांत यों बताया:

"जह्नु नामक राजर्षि के बंश में गाधि पैदा हुआ। उसके सत्यवती नामक एक पुत्री हुई। लेकिन उसके कोई पुत्र न हुआ। भृगु के पुत्र ऋचीक के साथ सत्यवती का बिबाह किया गया। ऋचीक ने अपने तथा अपने श्वसुर के लिए पुत्र पैदा होने के बिचार से निष्ठा पूर्वक हविष तैयार किया और उसके दो भाग करके सत्यवती से कहा - "यह अंश तुम अपनी माता को देकर, दूसरा अंश तुम खा लो। ऐसा करने पर तुम्हारी माता के गर्भ से एक पराक्रमी पुत्र पैदा होगा जो क्षत्रियों का वध करके राजा बनेगा । तुम्हारे गर्भ से परमशांत स्वभाव का एक पुत्र पैदा होगा ।"

इस घटना के एक-दो दिन बाद ही ऋचीक के आश्रम में सत्यवती के माता-पिता तीर्थ यात्राएँ करते हुए आ पहुँचे।

सत्यवती ने अपनी माता से अपने पति की कही हुई बातें सुनाई और दो अंशवाले हविष को उसके हाथ में दिया। सत्यवती ने जल्दबाजी में आकर हविष के उस अंश को खुद खा लिया , जिसे उसकी माता को खाना चाहिए था और उसे जिस अंश को खाना था, उसे अपनी माता को दिया। उस वक़्त जंगल से लौट कर ऋचीक ने सारी बातें जान लीं और कहा-" तुम्हारी माँ ने जो भूल की है, उसकी वजह से तुम्हारे गर्भ से महान क्रूर क्षत्रिय पैदा होगा और तुम्हारी माँ के गर्भ से एक ब्राह्मण पैदा होगा।"

सत्यवती इस पर बहुत दुःखी हुई और प्रार्थना की, "आप कृपया ऐसा कीजिए कि आपकी तपस्या की शक्ति के द्वारा मेरे गर्भ से क्रूर स्वभाव वाला पैदा न हो, चाहे तो मेरे पुत्र के पुत्र भले ही क्रूर क्यों न हो ! मैं अपने जीवन-काल में ऐसे पुत्र को देखना नहीं चाहती। मुझ पर इतनी कृपा अवश्य कीजिए...!" ऋचीक ने वचन दिया कि वह ऐसा ही करेगा।

तब सत्यवती के गर्भ से शांत स्वभाव वाला जमदग्नि, गाधि की पत्नी के गर्भ से विश्वामित्र पैदा हुए । जमदग्नि के परशुराम पैदा हुए। परशुराम ने बड़े होने पर गंधमादन पर्वत पर महादेव की आराधना की और उस भगवान के द्वारा अनेक अस्त्र और एक परशु भी प्राप्त कर लिया ।

उन्हीं दिनों में हैहय वंश के कृतवीर्य के पुत्र अर्जुन ने दत्तात्रेय के अनुग्रह से एक सहस्त्र

हाथ प्राप्त किये । सभी राज्यों को पराजित कर उसने अश्वमेध यज्ञ किया । ब्राह्मणों को अपार दान दिया । अग्निदेव जब उन प्रदेशों को जलाने लगा, तब उसमें वशिष्ठ ने क्रुद्ध हो शाप दिया - "मेरे आश्रम को अग्नि ने जैसे ध्वंस किया है, वैसे तुम्हारे हाथों को परशुराम ध्वंस करेगा।" यह श्राप सुनकर अर्जुन ज़रा भी विचलित नहीं हुआ ।

वास्तव में परशुराम और कार्तवीर्यार्जुन के बीच शत्रुता पैदा हो जाने का कारण अर्जुन के पुत्र ही थे। अर्जुन के पुत्र घमण्डी और दुष्ट थे। वे लोग एक बार घूमते हुए परशुराम के आश्रम में गये। उनकी अनुपस्थिति में वे लोग बलपुर्वक उनकी होमधनु तथा उसके बछड़े को हांक ले गये।

इसलिए परशुराम ने क्रुद्ध हो कार्तवीर्यार्जुन

के एक हज़ार हाथ काट दिये और अपनी गाय तथा बछड़े को वापस ले गये।

हैहय इससे चुप न रहे। एक दिन आश्रम में परशुराम को न देख फिर एक बार उन लोगों ने आश्रम पर हमला किया और उनके पिता जमदग्नि का सिर काट डाला । इस पर अत्यंत क्रुद्ध हो परशुराम ने प्रतिज्ञा की कि "इस वंश का नाम तक मिटा दूँगा।"

तब उन्होंने अर्जुन के पुत्र व पोतों का ही वध नहीं किया, बल्कि पृथ्वी पर जहाँ भी क्षत्रिय दिखाई देता, जाकर उनका वध कर बैठते थे। यह क्रम बहुत समय तक चलता रहा ।

इससे शांत हो परशुराम एक वन में जाकर तपस्या करने लगे। एक बार विश्वामित्र के पुत्र परावसु ने परशुराम के पास जाकर कहा- "तुमने सभी क्षत्रियों का वध करने की प्रतिज्ञा की; लेकिन उसकी पूर्ति नहीं की । प्रतर्दन वगैरह क्षत्रिय अभी तक जीवित हैं । ऐसी प्रतिज्ञा तुम्हें नहीं करनी चाहिए थी, जिसे तुम स्वयं पूरी नहीं कर सकते थे ।"

ये वचन सुनकर परशुराम क्रोध में उबल पड़े और उन्होंने पुनः आयुध धारण किये। इस बार वे वृद्ध, बालक तथा गर्भ में रहनेवाले पिण्डों का भी वध करने लगे। इस प्रकार इकीस बार परशुराम ने विश्व के सभी क्षत्रियों का वध किया। तब अश्वमेध यज्ञ करके सारी पृथ्वी पर अधिकार कर लिया और उसे उन्होंने कश्यप के हाथ दान दिया ।

कश्यप ने पृथ्वी को दान के रूप में ग्रहण करते हुए कहा- "हे परशुराम ! मैं तुम्हें केवल बैठने तक स्थान देता हूँ। तुम वहीं पर बैठ कर' तपस्या करो।" कश्यप के ब्राह्मणों के शासन में अराजकता फैल गई और बलवान व्यक्ति निर्दयतापूर्वक निर्बलों को सताने लगे ।

कश्यप को जब यह बात मालूम हुई तब उन्होंने पृथ्वी का शासन करने के लिए क्षत्रियों की खोज़ की। उस वक़्त उसे अनेक क्षत्रिय दिखाई दिये। कुछ हैहयों को उनकी माताओं ने गुप्त रूप से बचाया था। पुरु वंशी विदूरथ ऋक्ष पर्वत पर पला था। सौदास नामक क्षत्रिय की पराशर ने रक्षा की थी। शिबि के पुत्र की गायों ने रक्षा की, इसलिए उसका नाम गोपति पड़ा । प्रतर्द का पुत्र वत्स भी जीवित रहा। गुप्त नामक क्षत्रिय को गौतम ने आश्रय दिया था। बृहद्रथ की बंदरों ने रक्षा की। मरुत्त वंशी

क्षत्रिय पुत्रों को समुद्र ने बचाया था। इस तरह जो लोग अनेक प्रकार से जीवित रहें, वे शिल्पकार तथा स्वर्णकारों की जातियों में पलते व बढ़ते रहे।

कश्यप ने उन सभी क्षत्रियों को बुला भेजा। उन्हें भूमि देकर शासन करने को कहा। शीघ्र ही सर्वत्र नये-नये राजवंश निकल आये।"

कृष्ण के मुँह से इस प्रकार परशुराम की कहानी युधिष्ठिर ने सुनी, तब वे भीष्म को देखने गये। तब तक उत्तरायण के छप्पन दिन और शेष थे। भीष्म ने युधिष्ठिर को सांत्वना देते हुए समझाया- "युद्ध में शत्रुओं का वध करना राज धर्म के विरुद्ध नहीं है। बल्कि वह क्षत्रिय धर्म ही कहलाएगा। जब तक भीष्म जीवित रहें, तब तक वे युधिष्ठिर को अनेक धर्म, सूक्ष्म धर्म, नीति व उपदेश देते रहें। अंत में भीष्म ने नियत समय पर अपने प्राण त्याग दिये।"

उस समय एक विचित्र घटना हुई। भीष्म के शरीर के जिन अंगों से प्राण निकलने लगा, उन उन अंगों से बाण अपने आप छूट कर गिरते गये। देखते-देखते उनके शरीर के सभी बाण निकल कर गिर गये। इस दृष्य को देख सब लोग आश्चर्य में आ गये।

घृत तथा गंध द्रव्य लाकर पांडव तथा विदुर ने चिता सजाई। भीष्म के शव पर सफ़ेद वस्त्र ओढ़ा दिया गया और फूल गिरा दिये गये। भीष्म के श्वेत छत्र को युयुत्स ने, उसके चाँवर को भीम और अर्जुन ने, उनकी पगड़ी को नकुल और सहदेव ने संभाला। युधिष्ठिर तथा धृतराष्ट्र ने उनके चरण पकड़ लिए। तब भीष्म का दहन-संस्कार संपन्न हुआ। सब लोग गंगा तट पर पहुँचे। युधिष्ठिर ने जल तर्पण किये।

उस वक़्त युधिष्ठिर बच्चे की तरह रोने लगे। तब कृष्ण की प्रेरणा से भीम ने उन्हें सांत्वना दी। परंतु अपने भाई के दुःख को देख बाक़ी पांडव भी रो पड़े। उस समय धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को समझाते हुए कहा - "सौ पुत्र तथा समस्त को खोनेवाले मुझे तथा गांधारी को रोना है, लेकिन तुम क्यों रोते हो? तुमने राज्य जीत लिया है। तुम्हारे कंधों पर भारी उत्तरदायित्व है। तुम रोते हुए बैठ मत जाओ। इससे तुम अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर पाओगे।"

व्यास महर्षि ने युधिष्ठिर से यज्ञ करने की अभ्यर्थना की।

इसके उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा, "महात्मा! अश्वमेध दान देने होंगे ।

छोटे कतई पसंद नही हैं। बड़े-बड़े दान देने के लिए मेरे पास इस समय धन नहीं है। आप भी यह बात जानते हैं , जनता से भी बसूल नहीं किया जा सकता है । बेचारे दीन ब बच्चे शेष हैं । उनसे याचना करना मैं नहीं चाहता । रोनेवालों से मैं कर कैसे बसूल करूँ?"

इस पर व्यास महर्षि ने युधिष्ठिर को अपार धन पाने का उपाय बताया । प्राचीन काल में महाराजा मरुत ने यज्ञ करके ब्राह्मणों को दिल खोल कर दक्षिणों ने हिमालय पर छोड़ दिया है । उसे लाने पर बह धन यज्ञ के लिए पर्याप्त होगा ।

युधिष्ठिर ने महाराजा मरुत्त की कहानी सुननी चाही, तब व्यास ने यों बताया

"त्रेतायुग के प्रारंभ में मनु के वंश में करंध नामक एक राजा हुआ । उसने बृहस्पति को याजक बनाकर सौ अश्वमेध यज्ञ किये और तब जाकर वह इंद्र के समान कहलाया। उसका पुत्र मरुत्त पिता से भी योग्य निकला । उसने यज्ञ करने का संकल्प करके हज़ारों स्वर्णपात्र तैयार कराये । उस यज्ञ के लिए पात्रों के साथ समस्त उपकरण सोने से ही बनाये गये थे। राजा मरुत्त ने अनेक राजाओं के साथ मिलकर हिमालय की उत्तरी दिशा में मेरु पर्वत के समीप एक छोटे से पहाड़ पर यज्ञ किये।

इन यज्ञों के लिए बृहस्पति को याजक बनना था। मगर इंद्र राजा मरुत्त के प्रति ईर्ष्या रखता था। इस कारण बृहस्पति को याजक बनने से रोका।

इस पर मरुत्त ने बृहस्पति के छोटे भाई संवर्त को याजक नियुक्त किया। अत्यंत वैभव के साथ यज्ञ संपन्न हुआ। तब मरुत्त ने सोने के ढेर लगवा कर ब्राह्मणों में दान किये। उस वक़्त बहुत सारा सोना बच गया। उस सोने को तुम ले आओ।" यही सलाह व्यास ने युधिष्ठिर को दी।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

इस अंक में आप एक स्थान पर महान कवियित्री सरोजिनी नायडू के बारे में पढ़ेंगे। जिन्हें गाँधीजी 'भारत कोकिला' कहते थे। परन्तु आप भारत की अन्य प्रसिद्ध महिलाओं से कहाँ तक परिचित हैं ?

१. भारत की राजधानी बनने के पूर्व, दिल्ली पर एक महिला का राज्य था। वह कौन थीं ? और कितने समय तक उन्होंने राज्य किया?

२. एक विदेशी महिला जो भारत में बस गयीं थीं और उन्हें 'भारत रत्न' तथा 'नोबल सम्मान' दोनों से सम्मानित किया गया। वह कौन थीं ?

३. भारत सरकार ने एक महिला के सम्मान में एक सिक्का चलाया। वह महिला कौन थीं ?

४. जवाहरलाल नेहरू द्वारा स्थापित मंत्रीमंडल में पहली महिला सदस्य कौन थीं ?

५. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा संचालित आजाद हिन्द मंत्रीमंडल की सदस्या कौन थीं ?

६. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्षा कौन थीं?

७. एक अभिनेत्री पहली बार राज्य सभा के लिए चुनी गयीं। वह कौन थीं?

८. दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध गायिका ने हिन्दी फिल्म 'भक्त मीरा' में नायिका की भूमिका निभायी। उनका नाम बताईये?

९. वह कौन सी महिला लेखिका हैं जिन्होंने अपने प्रथम उपन्यास के लिए 'बुकर पुरस्कार' प्राप्त किया ?

१०. कौनसी महिला लेखिका ने सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त किया ?

११. वह कौनसी महिला कलाकार थीं जो सर्वप्रथम भारतीय एवं एशिया की 'ग्रैन्ड सलोम ऑफ पेरिस' की सदस्या बनीं ?

१२. भारत की कौनसी गायिका का नाम गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड में लिखा गया ? उन्होंने क्या लक्ष्य प्राप्त किया ?

(उत्तर अगले अंक में)

चंदामामा प्रस्तुति
अजेय गरूड़ा
ART: PAANI
चन्द्रपुरी नामक राज्य में महेन्द्रदेव नामक चंद्रवंशीय राजा शांति और समृद्धि के साथ राज्य करता था। राजा के कोई संतान नहीं थी। रानी के भाई नरेन्द्रदेव का पुत्र रविन्द्रदेव सभी ओर से राजमुकुट को प्राप्त करने का अधिकारी था। नरेन्द्रदेव सेनापति होने पर भी सक्षम नहीं थे। योग्य मंत्री की आकस्मिक मृत्यु से राजा को बड़ा दुःख पहुँचा। जो अपने बेटे आदित्य को युद्ध कला के अभ्यास के लिए भेजता था। उसे ही दरबारी बनाया गया।

उसके बाद राज्य में डाकूओं की बढ़ती घटनाओं को सुनकर राजा बहुत क्रोधित होता। वह दरबार में ही अपना गुस्सा निकालता।
क्या इस बेवजह की समस्या को रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता?

मैंने तो इसे कब का समाप्त कर दिया होता, यदि महाराज ने उन्हें जिन्दा पकड़ने की आज्ञा न दी होती तो!

आदित्य, डाकुओं को पकड़ने का कार्य मैं तुम्हें सौंपता हूँ।
सेनापति की सफाई से राजा नाखुश हुआ। उसने नवयुवक दरबारी को भेजा।

जी, महाराज! मैं कल ही उनके पीछे जाऊँगा। आज मेरी बहन मेरे वापस आने के बाद पहली बार घर आ रही है।

ठीक है! लेकिन कल से तुम अवश्य आरम्भ कर दो!

उस रात एक पालकी जंगल से होकर जा रही थी। न ही संरक्षक और न ही पालकी ढोने वाले इस बात से परिचित थे...

...कि कोई उनके समूह पर थोड़ी ही दूरी पर पहाड़ी के ऊपर से नजर रख रहा है।

अचानक...
एक संकेत...

पालकी को चारों ओर से घेर लिया गया। पालकी उठाने वालों ने इसे नीचे रख दिया। उन पर आक्रमण हुआ।

जो भी अंदर है बाहर आ जाए।
सारा कीमती सामान दे दो !!
वह भागना चाहता है, उसे पकड़ो !

वह औरतें कहाँ गायब हो गईं ?
क्या वे सब भाग गईं ?
मैंने कोई औरत यहाँ नहीं देखी।
अरे...! कुछ - घुड़सवार !
पूरा दल भौचक्का रह गया।
हमें सावधान रहना चाहिए !!
क्या यह एक चाल है ?
चलो पेड़ों में छिप जाएँ।

सैनिकों के एक समूह ने पालकी के टूटे हुए हिस्सों को इधर-उधर किया।
नहीं, यहाँ पर कोई भी नहीं है।
लेकिन वे छिपे नहीं होंगे।
कुछ झाड़ियों के पीछे हैं !
उन सभी को पकड़ो। हम लोग उन्हें राजा के पास ले जाएँगे।
ऐ...! तुम लोग पेड़ से नीचे उतरो !

डाकुओं को पहचान लिया गया। शीघ्र ही उन्हें पकड़कर एक दूसरे से बांध दिया गया और सैनिक उन्हें महल की ओर लेकर चल दिए।
CU.. koo..

सैनिक और उनके कैदी महल के द्वार पर पहुँचे।

जाकर राजा को सूचित करो कि डाकू पकड़े गए। मैं उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करूँगा।

जब पहरेदार भीतर आया, राजा सेनापति के साथ बैठा था।
उन्हें भीतर भेजो! मैं उन्हें दरबार में मिलूँगा।

श्रीमान, राजा दरबार में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इन्हें कैद खाने में डाल दो! इनका सरदार कौन है? मैं उसे जनता के सामने फाँसी देना चाहता हूँ।
महाराज मैं यह तो नहीं जानता कि इनका नेता कौन है, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि महल में कोई सूचना देनेवाला है। इसीलिए मैंने इन्हें पकड़ने के लिए यह नाटक रचा।

डाकुओं को जेल की ओर ले जाया जाने लगा। आदित्य ने उसमें से एक को पहचान लिया।

रामसिंह!
जी श्रीमान! आपने तो हमें पकड़ लिया, लेकिन आपने चन्द्रपुरी के लोगों से विश्वासघात किया।
(क्रमशः)

चेतावनी

सोमनाथ का परिवार छोटा था, सोमनाथ, पत्नी, बेटा और एक बेटी। पत्नी कुसुम कोमल स्वभाव की थी। पति की बात को कभी टालती नहीं थी। उनका बेटा राजपुर में पढ़ रहा था। बेटी मालती शादी के लायक़ उम्र की हो गयी।

एक दिन पति-पत्नी घर के मामलों को लेकर आपस में बातें कर रहे थे। कुसुम पति से कह रही थी कि "बेटे को शहर भेजकर उसे शिक्षा दिलवानी हो तो खर्च से बचना होगा। हमें किफायत बरतनी होगी।"

"तुम्हारी जैसी पत्नी हो तो किफायतमंदी की क्या कमी ?" यों सोमनाथ ने पत्नी की तारीफ़ की।

उसी समय पर लालू उन्हें देखने आया। वह गोविंदपुर का निवासी था। उस गाँव में सोमनाथ की दस एकड़ों की उपजाऊँ जमीन है। लालू ही वहाँ उस खेत की देखभाल करता रहता है। हर साल उसमें जो फ़सल होती है, उसे बेचकर इन्हें रुपये दे जाता है। हाँ, इस रक़म में से एक हिस्सा ले लेता है।

लालू ने सोमनाथ से कहा यजमान, हम बड़े भाग्यवान हैं। इस साल बड़ी अच्छी फ़सल हुई है। कर्ज़दारों से हमें जो मिलना था, वह भी मिल गया। एक महीने के अंदर और पाँच हज़ार रुपये लाकर आपको सौंपूँगा।

"लालू तुमने बड़ा ही शुभ समाचार सुनाया। आज तुम्हें हमारे घर में भोजन करके ही जाना पड़ेगा", कुसुम ने प्रेमपूर्वक कहा।

"नहीं मालकिन! आज एक ज़रूरी काम पर यहाँ आया हूँ। मेरी बेटी की शादी तय हो गयी है। दो हज़ार रुपयों की क़ीमत का एक हार बनवाना है। एक महीने के अंदर आपको रुपये लाकर दूँगा

रमण कथ्याल

और साथ ही अपना कर्ज भी चुका दूँगा।''

लालू विश्वस्त आदमी है। जान जाए, पर अपने वचन से नहीं मुकरता। इसलिए उसे कर्ज देने में पति-पत्नी नहीं झिझकते। किन्तु उस समय घरेलू खर्च के लिए दो सौ रुपए मात्र उनके पास थे।

कुसुम अपने पति की संदिग्धावस्था को ताड़ गयी। इशारा देकर उसने उसे घर के अंदर बुला लिया और कहा, ''लालू की आवश्यकता सच है, वास्तविक है। कहीं से कर्ज़ लेकर ही सही, उसकी ज़रूरत पूरी करनी होगी। ऐसे आड़े वक्त पर उसकी मदद करना हमारा फर्ज है।''

दोनों सोच में पड़ गये कि कर्ज किससे मांगे। तब कुसुम को अकस्मात् विष्णु याद आया। अफ़वाह फैली थी कि उसे कल किसी से पंद्रह हज़ार रुपये मिले।

''हमें भी पाँच हज़ार रुपयों की ज़रूरत है। बिटिया रेशमी लहंगा खरीदने के लिए जिद कर रही है। बेटे ने भी कई बार कहा कि उसे चाँदी की अंगूठी चाहिए। उनकी माँगों को हर दशा में हमें पूरा करना होगा। विष्णु से हम कर्ज मांगे तो वे इनकार नहीं करेंगे। जब हमें उनसे कर्ज माँगना ही है तो पाँच हज़ार रुपए माँगिये। हमारी भी इच्छाएँ पूरी होंगी और साथ ही लालू की सहायता भी हो जायेगी।''कुसुम ने कहा।

सोमनाथ ने पत्नी का प्रस्ताव मान लिया। इतने में लालू जौहरी के पास गया। सोमनाथ विष्णु के घर गया। विष्णु ने बाहर आकर देखा कि उसके घर के सामने बहुत लोग खड़े हैं। वह भाँप गया कि ये सब लोग कर्ज माँगने आये हैं। अप्रत्याशित रूप से उसे मिले धन को लेकर लोग उसका अभिनंदन करने लगे। किन्तु, मन ही मन वे सब लोग इसी बात को लेकर चिंतित थे कि कैसे उनसे कर्ज़ मांगा जाए।

विष्णु भी समझ गया कि इतने लोग यहाँ क्यों जमा हैं। सबको देखते हुए उसने कहा, "पैसा कमाना मुश्किल और खर्च करना आसान काम है। जब आदमी के पास धन हो तब वह इस बात को भूल जाता है। इसलिए खर्च से बचने के लिए मैं अपना यह सारा धन सूद के ब्यापारी सुंदर को सौंपूँगा। वह हर महीने मेरे धन का ब्याज चुकाता रहेगा। मुझे इसके लिए उसे कोई हामी देने की ज़रूरत नहीं है। यदि मुझे भी धन की आवश्यकता आन पड़ी तो मैं भी ब्याज पर लूँगा। जो वह मुझे देगा वह थोड़ा-बहुत कम होगा और जो ब्याज वह दूसरों से वसूल करेगा, वह ज्यादा होगा। इससे उसे भी मुनाफ़ा होगा। अनावश्यक खर्च से बचने के लिए ही मैं ऐसा प्रबंध कर रहा हूँ।"

अपनी ही रकम को किसी और को सौंपकर उसी से ब्याज पर कर्ज़ लेनेवाले से कोई क्या पूछे। इसलिए लोग धीरे-धीरे वहाँ से खिसक गये। सोमनाथ को विष्णु भली-भाँति जानता था और दोनों में अच्छी दोस्ती भी थी। विष्णु उसकी झिझक को ताड़ गया और उसने सोमनाथ से कहा, "हम दोनों दोस्त हैं। बात को मुझसे क्यों छिपाते हो? चलो दोनों सुंदर के पास जाएँ। सालाना हर सौ रुपयों पर पंद्रह रुपयों का ब्याज लगेगा। पंद्रह हज़ार रुपयों तक की रक़म मैं हर हालत में तुम्हें कर्ज़ पर दिलाऊँगा। मेरा एतबार करो और चलो। बताओ, तुम्हें कितनी रक़म चाहिए ?"

हर सौ रुपयों पर पंद्रह रुपयों का ब्याज। यह सुनते ही सोमनाथ का दिल बैठ गया। उसके मुँह से बात ही नहीं निकली। सोच-समझकर वह इतना ही कह पाया कि "मुझे सिर्फ़ दो हज़ार रुपये चाहिए।"

दोनों सुंदर के पास गये। विष्णु ने सोमनाथ
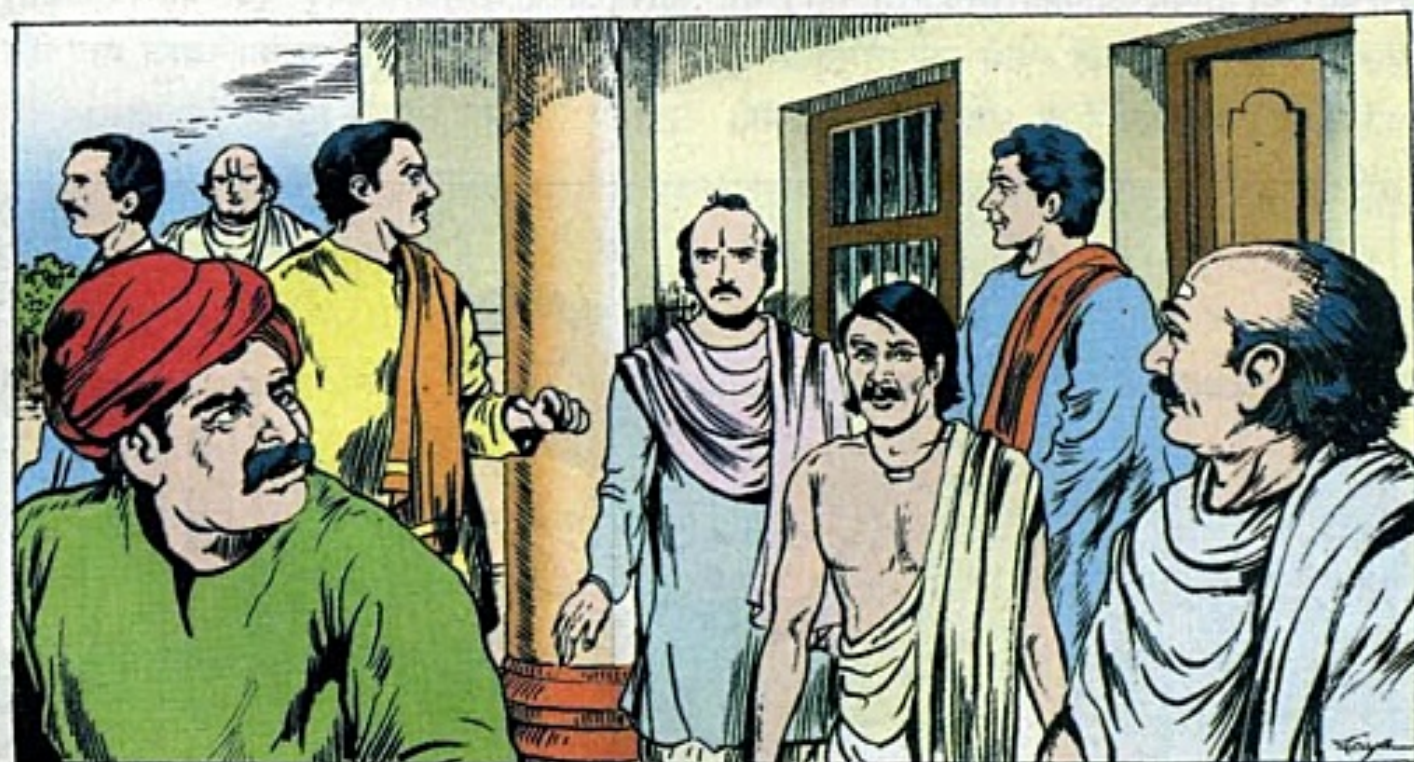
के ही समक्ष सुंदर को पंद्रह हज़ार रुपये दिये। उसने विष्णु के हाथ में रसीद थमाते हुए कहा, "हर सौ रुपयों के लिए हर साल तेरह रुपयों का ब्याज तुम्हें दूँगा।"

सोमनाथ ने यह शर्त स्वीकार करते हुए उससे दो हज़ार रुपये कर्ज़ में लिये। पैसे देते हुए सुंदर ने कहा, "साधारणतया हर साल सौ रुपयों पर बीस रुपयों का ब्याज लेता हूँ।" किन्तु, मेरे पास जो लोग धन सुरक्षित रखते है, उनसे केवल तेरह रुपयों के हिसाब से ही ब्याज वसूल करता हूँ। फिर उसने काग़जों पर दस्तख़त करवाये और दो हज़ार रुपये सोमनाथ को दिये।

सोमनाथ मन ही मन दुःखी था। पर करे भी क्या ! एक तरफ विष्णु उसे जिगरी दोस्त कह रहा है और दूसरी तरफ़ उसे अधिक ब्याज पर अपने ही पैसे दिला रहा है। वह अपनी लाचारी पर अपने आपको धिक्कारता रहा। दो हज़ार लेकर उसने वह रक़म ज़रूरतमंद लालू को दे दी। एक महीने के अंदर ही अपने वादे के मुताबिक लालू ने वह रक़म लौटा दी। दो हज़ार और ब्याज की रक़म लेकर जब वह विष्णु के घर गया तो उसने साफ़-साफ़ कह दिया कि "मैं थोड़े ही ब्याज का ब्यापारी हूँ। क्या दोस्त से ब्याज वसूल करूँगा।" कहकर उसने मूल रक़म दो ही हज़ार उससे लिये।

सोमनाथ हक्का-बक्का रह गया। अब वह समझ गया कि कर्ज लेने से होनेवाले नष्ट-कष्टों को समझाने के उद्देश्य से ही वह उसे सुंदर के पास ले गया, ब्याज वसूल करने के उद्देश्य से नहीं। अगर वह ऐसा पेश नहीं अता तो दो हज़ार रुपयों के बदले पत्नी के कहे अनुसार पाँच हज़ार उधार लेता और पूरा का पूरा खर्च कर देता।

यह उसको सावधान करने के लिए उसे सिखाया गया पाठ था। लालू ने दो हज़ार रुपयों के साथ फसल को बेचने से मिले पाँच हज़ार रुपये की अतिरिक्त रक़म भी उसे दी थी। अब उसने वे पाँच हज़ार रुपए सुंदर को दिये और कहा कि हर महीने मुझे इसका ब्याज मात्र देते रहो।
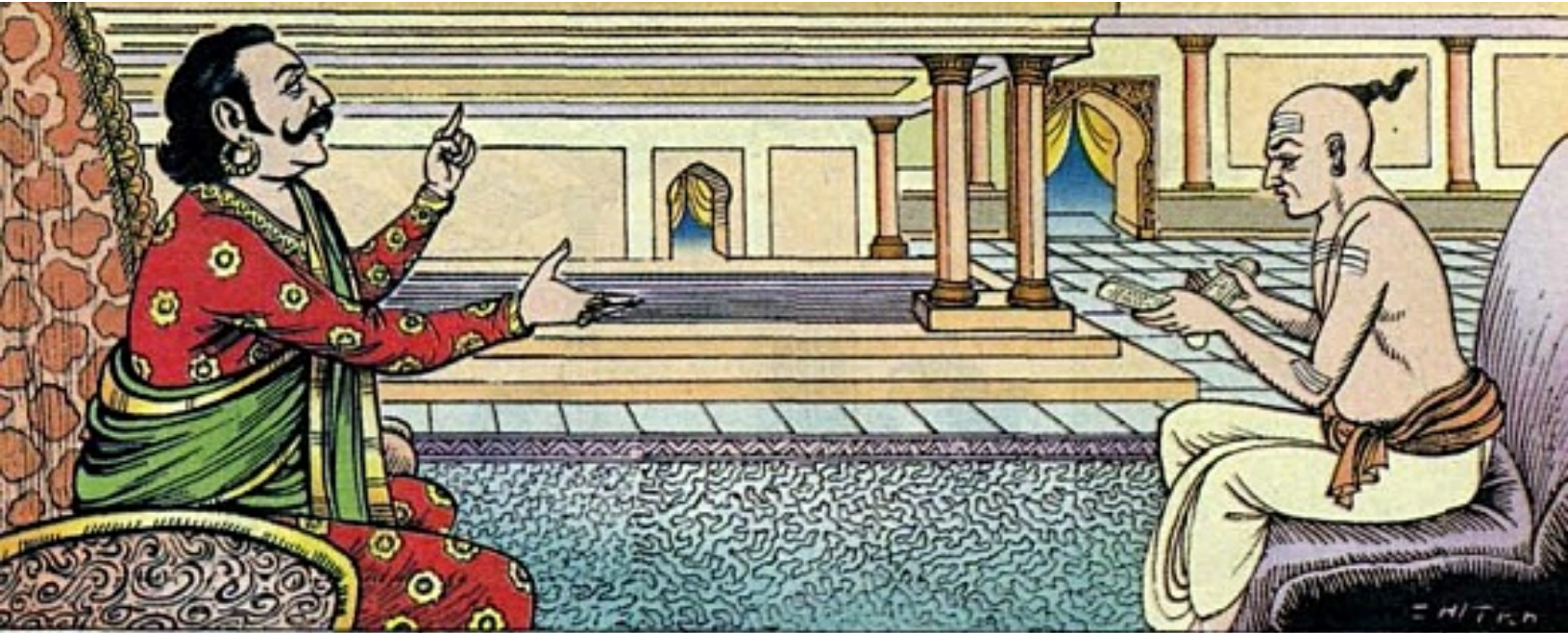
राजा की समस्या

एक नगर में एक राजा था। वह अच्छा आदमी तो ज़रूर था, लेकिन उसकी अक्ल मोटी थी। एक दिन एक ब्राह्मण राजा के घर पर पुराण का वाचन कर रहा था। उस संदर्भ में यमलोक के बारे में पढ़ते हुए ब्राह्मण ने सुनाया कि वहाँ पर तरह-तरह के पाप करनेवाले कैसी सज़ाएँ पाते हैं।

पुराण का वाचन समाप्त होते ही राजा ने ब्राह्मण से पूछा-"पंडितजी, आप स्वर्ग और नरक के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन मेरी इस शंका को कृपया दूर कर दीजिये। जहाँ तक हम जानते हैं- हमारे ऊपर आकाश है और नीचे ज़मीन है। भूलोक में तरह तरह के प्राणी हैं। उनमें से कुछ लोग स्वर्ग में और कुछ लोग नरक में कैसे जाते हैं? मुझे विस्तारपूर्वक समझाइये।"

यह सवाल सुनकर ब्राह्मण चकित रह गया। फिर यह सोचकर वह डर भी गया कि उत्तर न देने पर न मालूम राजा क्या कर बैठेंगे! "महाराज...! आपके सवाल का जवाब देना हो तो सभी शास्त्रों का परिशीलन करना होगा। इसलिए मुझे थोड़ा समय दीजिये।" राजा से यह कह कर वह ब्राह्मण दूसरे दिन सुबह अपने गाँव की ओर भाग गया।

दूसरे दिन राजा को मालूम हुआ कि वह ब्राह्मण भाग गया है। उसने सोचा कि उसके सवाल का जवाब न दे सकने के कारण ही वह भाग गया होगा। इसलिए राजा ने सोचा कि इतना पढ़ा-लिखा आदमी भी उसके सवाल का जवाब न दे सका, इसका मतलब यह है कि उसका सवाल बहुत ही गम्भीर है। यह सोचकर वह जो भी दीखता, उससे वही सवाल पूछने लगा।

जल्द ही राज्य-भर में राजा का सवाल सबको मालूम हो गया। पुराण सुनानेवाले ब्राह्मण के एक लड़का था। वह अव्वल दर्जे का आवारा था। वह

पचीस वर्ष पहले 'चन्दमामा' में प्रकाशित पुरानी कथा

हमेशा अपनी माँ को तंग करता था। एक दिन जब उसकी माँ गेहूँ पीस रही थी, तब वह अपनी माँ को सताने लगा।

माँ ने खीझकर कहा-"राजा की समस्या तुम सुलझा सकते तो क्या ही अच्छा होता?" "समस्याएँ तो हम जैसे गरीबों के लिए होती हैं। मगर राजा के लिए भी कहीं कोई समस्यायें होती हैं? वह कैसी समस्या है!" लड़के ने अपनी माँ से पूछा। वह भी माँ के सामने बैठकर चक्की पीस रहा था।

"हमें ऊपर आकाश दिखायी देता है, नीचे ज़मीन। इस ज़मीन पर करोड़ों की संख्या में प्राणी हैं। उनमें कुछ लोग स्वर्ग में और बाक़ी लोग नरक में क्यों और कैसे जाते हैं? यही राजा की समस्या है?" यह कहते हुए उस लड़के की माँ ने चक्की के ऊपर का पाटा उठाकर दिखाया। तब उस लड़के ने देखा कि चक्की में गेहूँ के कुछ दाने फटे हुए हैं और कुछ दाने ज्यों के त्यों हैं। झट उसकी समझ में कोई बात आयी। वह सीधे राजमहल में गया और दरबान से बोला-"मैं राजा के दर्शन अभी करना चाहता हूँ।"

उस लड़के के वेश को देख द्वारपाल बोले-"राजा तुम जैसे लोगों को थोड़े ही दर्शन देंगे? जाओ...!"

"मैं राजा की समस्या को हल करने आया हूँ। यह बात राजा से कह दो।" ब्राह्मण के लड़के ने कहा।

राजा को जब खबर मालूम हुई तब उसे अन्दर

आने की अनुमति मिल गयी। लेकिन उस लड़के को देखते ही राजा को संदेह हो गया कि वह उसके सवाल का जवाब दे न सकेगा।

"मेरी समस्या क्या तुम्हारी समझ में आ गयी? तुम सचमुच जवाब दे सकते हो?" राजा ने उस लड़के से पूछा।

"मैं केवल मौखिक जवाब नहीं दूँगा, बल्कि प्रत्यक्ष दिखा दूँगा।" ब्राह्मण के लड़के ने कहा।

राजा ने तुरंत अपने सभी सभासदों को बुला भेजा। भरी सभा में ब्राह्मण के लड़के को बुलवाकर अपनी समस्या का समाधान देने का आदेश दिया।

चक्की और गेहूँ मंगवाये गये। ब्राह्मण के लड़के ने मुट्ठी-भर गेहूँ चक्की में डालकर पीसते हुए कहा- "महाराज...! देखिये। ऊपर घूमनेवाला पाटा आकाश है, नीचे जो पाटा स्थिर है, वह ज़मीन है। इसमें डाले गये गेहूँ प्राणी हैं। गेहूँ डालनेवाले भगवान हैं। हाथ की पाँचों उंगलियाँ पंचभूत हैं। चक्की का मूठ यमराज हैं। वे पापियों को इस प्रकार सताते हैं।" यह कहते हुए वह लड़का ऊपर का पाटा उठाकर बोला-"देखा महाराज? कई दाने पिसकर यमयातनाएँ झेल रहे हैं, यानि नरक भोग रहे हैं। लेकिन कुछ दाने ज्यों के त्यों हैं। यह यमलोक से बचे हुए प्राणी हैं। उन्हें नरक का भय नहीं है। वे स्वर्ग का सुख भोग रहे हैं।"

राजा बहुत प्रसन्न हुआ और पूछा-"ओह, तुम कैसे ज्ञानी हो? बताओ, जल्दी...! तुम किसके लड़के हो?"

"महाराज! आप को पुराण सुनानेवाले पंडित का पुत्र हूँ।" ब्राह्मण के लड़के ने उत्तर दिया।

"तुम अपने पिता से भी बड़े ज्ञानी हो!" यह कहकर राजा ने उसे शॉल और पुरस्कार देकर उसका सम्मान करके भेज दिया। उस दिन से वह आवारा लड़का अपने नटखट के काम छोड़कर अच्छा जीवन बिताने लगा।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २५ तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

ब धा इ यां

दिसम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

राजेश्वरी सिंघ

३/१, सर्वप्रीय विहार,

नई दिल्ली - ११००१६.

विजयी प्रविष्टि :

पहला चित्र : भारतीय किसान मेरा नाम

दूसरा चित्र : पेड़ काटना बुरा है काम

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 2001 Registrar of Newspapers, India RN1087/57